लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

सम्पादक

श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक

रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

अक्टूबर-दिसंबर, 2019

बरस : 43 अंक : 1 पूर्णांक : 145

संपादक
श्याम महर्षि

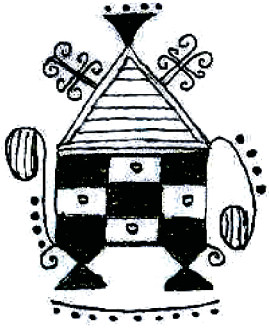

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
राजस्थानी साहित्य-संस्कृति पीठ
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com
ravipurohit4u@gmail.com

आवरण
किरण राजपुरोहित 'नितिला'

मांडणा
डॉ. पूजा विकास राजपुरोहित

ग्राहक शुल्क
पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 1500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

नूंवा लेखकां री हूंस बधावण री जरूरत — *श्याम महर्षि* — 3

कहाणी

समझदार दीखतो डोफो आदमी — *ओमप्रकाश भाटिया* — 4

लघुकथा

परफेक्ट होम / गैलो / हिस्ट्री रिपीट इट सेल्फ / भै — *पूर्णिमा मित्रा* — 12

संस्मरण

म्हारा दा — *अनुसूया चारण* — 15

चितार

बेरूपो — *भोगीलाल पाटीदार* — 21

कविता

स्रिस्टी रो चक्को / प्रीत / घर / पख / गिरणो — *पूनमचन्द गोदारा* — 26

म्हारो इंदरधनख / संकळप / मुगती / इमरतियो कुंड — *डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'* — 28

म्हारी कविता / अरदास — *राजाराम स्वर्णकार* — 30

मायड़ थारै आंगणियै / मायड़ भासा — *निशा आर्य* — 32

रिस्ता / खुद रो कुण ? / थूं तो नीं है / म्हारो घर

खोज मिनखपणै री / दरद / परम्परा — *पुनीत रंगा* — 34

जात्रा / रेत / धोळो पानो / जरूरी है कांई / बिरखा / देस मांय — *विप्लव व्यास* — 36

प्रीत रो अणहद नाद / हेत जगावै छोरयां — *मीनाक्षी आहूजा* — 38

सोरठा

काळिया रा सोरठा — *महेन्द्रसिंह सिसोदिया 'छायण'* — 40

दोहा

नैण बहावै नीर — *शकुंतला अग्रवाल 'शकुन'* — 42

गजल

ठौर बदळग्या नेतां का / कम रैग्या / तंबाकू नैं छोड बावळा — *प्रहलाद कुमावत 'चंचल'* — 44

गीत

बेटी री अरज / मोबाईल / नारी अर जंजीर — *प्रीतिमा 'पुलक'* — 46

डूंगर / चिड़कली / जोऊं थांरी बाट — *सुनीता बिश्नोलिया* — 48

मांडणा-कला

मोत्यां सूं मूंघा म्हारा मांडणा — *डॉ. पूजा विकास राजपुरोहित* — 50

कूंत

आंचळिकता री आत्मीय डायरी—'हाट' — *डॉ. आईदानसिंह भाटी* — 55

नूंवा लेखकां री हूंस बधावण री जरूरत

किणी पण भासा रै साहित्य रो भविष्य उणरी नूंवी पीढी रा रचनाकार हुया करै। राष्ट्रभासा हिंदी में तो नूंवा लेखकां नैं साहित्यिक मंच मिलण रा अर उणां री रचनावां रै छपण अर प्रसारण रा मोकळा माध्यम है, पण भारत री बीजी प्रांतीय भासावां, खासकर राजस्थानी भासा री नूंवी पीढी रा लेखक इण अभाव नैं मैसूस कर रैया है। राजस्थानी में पत्र-पत्रिकावां री कमी अर पोथी छपावण रै आंझै काम नैं देखतां अठै रा नूंवा लेखकां नैं साहित्यिक मंच प्रदान करण अर वांरी रचनावां नैं ओपतो आवकारो देवण री घणी जरूरत लखावै।

राजस्थानी में आज री बगत नूंवी पीढी रा मोकळा ऊरमावान लेखक लगोलग सिरजण कर रैया है, पण रचना छपावण रा पूरा संसाधन नीं हुवण रै कारण अै लेखक फेसबुक कै वाट्सएप माथै ई आपरी रचनावां पोस्ट कर'र मन बिलमा रैया है। राजस्थानी री कीं पत्र-पत्रिकावां राजस्थानी रै युवा लेखन नैं प्रोत्साहन देवण सारू युवा विसेसांक काढण री घोसणा ई करी, पण अपरिहार्य कारणां सूं वांरी पार नीं पड़ी।

इण अभाव नैं देखतां 'राजस्थली' रै इण अंक में वां रचनाकारां नैं सामल करीज्या है, जका आज तांई कदैई राजस्थली में नीं छप्या। अेक 'कूंत' स्तंभ नैं इण रो अपवाद कैय सकां। राजस्थली में पैली बार छपण वाळै आं रचनाकारां री रचनावां राजस्थानी रै समकालीन सिरजण री लूंठी बानगी है। कीं रचनाकारां री रचनावां पाना संख्या री सींव रै कारण इण अंक में नीं आय सकी है, जकी नैं आगलै अंकां में देवण रो म्हारो प्रयास जारी रैसी। 'राजस्थली' री भांत दूजी पत्र-पत्रिकावां नैं अर साहित्य री विविध विधावां में संकलन त्यार करणिया संपादकां नैं ई इण कानी ध्यान देवण री जरूरत है, जद ई राजस्थानी भासा नैं दूजी भारतीय भासावां रै समकालीन सिरजण री पांत में ऊभी देखी जाय सकैला।

—श्याम महर्षि

ओमप्रकाश भाटिया

समझदार दीखतो डोफो आदमी

अंधारो गैरो होयग्यो हो, पण इत्तो ई नीं कै कीं दीखै ईज नीं। नहर रो तावळो बैवतो मीठी आवाज में पाणी अर नहर रो पूरो विस्तार। उणरै ओळै-दोळै उगियोड़ा रूंख होळै-हौळै काळै पड़तै आभै रै केनवास माथै काळै चितरामां में बदळ रिया हा। नहर रै पुळ जिणरै किनारै री चट्टान माथै सत्यप्रकाश बैठा हा, रो दूजो छोर अंधारै में लोप होयग्यो, जदकै बठै रै रूंखां रै बिचाळै सूं आभो दीखतो हो। सत्यप्रकाश देख्यो अंधारो कित्तो ई गैरौ होय जावै, घणघोर नीं होय सकै। उजास कीं तो रैसी। अमावस री रात में तारा घणा तेज चमकै है। रात रोज उजाळां रा बीज आभै में बिखेरै, सुबै उजाळै री भरपूर फसल व्है। सूरज रो उजास चारूंमेर पसर जावै।

उजास मध्यम पड़ सकै, पण हारै कोनी।

सत्यप्रकाश रेगिस्तान में आई इण नहर नै अचूंभै सूं जोवता रैवै। पंजाब सूं हजारां कि.मी. लांबी नहर इण तपतै धोरां में ले आया। इणमें अरबां रुपिया खरच हुया हा। करोड़ां खळक खायग्या। झौंकां अर लू सूं तिड़कतै धोरां में जठै पाणी री बूंद-बूंद नैं तरसते मिनख रो रैवणो दौरो हो बठै रेत रै डीघै-डीघै धोरां मांय जळधारा लावणी किणी भागीरथ काम सूं कम नीं हो। इण नहर मरुथळ रो भूगोल बदळ दियो। नहर सूं माइनर काढी ही। माइनर सूं खाळा। पसरयोड़ै मरुथळ री चकबंदी हुई अर 25-25 बीघां रा मुरब्बा अलॉट होयग्या। खेतां में पाणी पूगण लाग्यो अर लोग जमीनां जोतण लाग्या।

आं दिनां सत्यप्रकाश री बैंक, खेती रा करजां देवण सारू इण छोटै-से गांव में आपरी साखा खोल दी। आ गांव रै दूजै कानी ही, जठै सड़क सूं नहर अर गांव पार कर'र बठै दो कि.मी. पाळो जावणो पड़ै।

ठिकाणो :
'मातृछाया'
भाटिया पाड़ा
जैसलमेर-345001
मो. 8209455546

 ISSN : 2320-0995

इणी साखा में सत्यप्रकास री पोस्टिंग साखा प्रबंधक रै पद पर हुई। वांरै साथै अेक सहायक हो, वो किणी स्हैर रो रैवण वाळो हो अर इणी गांव में अेक कमरो किरायै पर लेय'र रैवतो हो। सत्यप्रकाश रोज सिंझ्या रा बैंक बंद कर स्हैर आपरै घरां जावण सारू नहर कानी आवता अर बस री बाट जोवता हा।

जावण नै तो इण रोड़ सूं घणी गाडियां स्हैर जावती ही, पण सत्यप्रकाश किणी सूं ई लिफ्ट नी मांगता हा। बीकानेर सूं अेक बस सिंझ्या रै सात बजी रै औळै-दौळै आवती ही। वा उणीज में स्हैर जावती ही। इणी बस सूं वै सुबै आठ बज्यां पाछा आवता हा।

नहर रै सारै-सारै बस बीकानेर सूं आवती अर अठै आय'र स्हैर कानी मुड़ जावती। आगै नहर रै सारै-सारै नीं जावती। आगै कोई स्हैर नीं हो। ही तो छोटी-छोटी ढाणियां अर पाकिस्तान रो बोर्डर।

सत्यप्रकाश नहर रै किनारै बैठ्या पाणी रै बहाव अर हरियाळी री सौरम नै आपरै मांय लेवता मगन हुयोड़ा रैवता। सफेदो, सरेस, कनेर, पीपळ, बरगद रै साथै खेजड़ी, बोरड़ी अर बावळ ई नहर रै किनारै आपरी पूरी ऊंचाई सूं ऊभा लैरावता रैवता। पाणी री कलकल अर बायरै रै साथै गुणगुण करता रूंख गजब रो संगीत भर देवता हा।

वै भावुक होय जावता। सैकड़ां बरसां तांई इण मरुथळ में पाणी सारू भमतां मिनख तड़प-तड़प'र जान दे दी। कित्ता काळ-दुकाळ झेलिया। आपरी हदां सूं बारै तांई तपती लू अर झांखां रै साथै हाहाकार मचातो भमतो-भटकतो-पसरतो औ मरुथळ। तिरसै कंठ नै आभै तांई ऊंचावतो अेक बूंद सारू भूताळा बण नाचतो रैवतो औ मरुथळ। अबै जाय'र आ जळधारा उणरै हियै माथै बैवण लागी है। औ बीजां नै आपरै मांय समाय हरियाळी लावण नै उतावळो दीखै। फसलां नै लहलहावतो झूमण लाग्यो है अबै।

सत्यप्रकाश री आ मानता ही कै वांनै इण मौकै भूमिपुत्रां री सेवा रो मौको मिल्यो है। वांरै हाथ में कलम आई है, जिणसूं खेती सारू लोन देय मुस्किलां में पड़ियोड़ै करसां नै कीं सहूलियत दीरीजै तो औ वांरो सौभाग्य होसी। सो वै पूरी ईमानदारी अर खिमता सूं सेवा में लागग्या अर बेगी ई बठै री तकदीर बदळण लागी। करसां नै आर्थिक संबल मिलण लाग्यो अर वै भरपूर साधनां सूं खेती में लागग्या। सत्यप्रकाश नै आणंद री अनुभूति होवती अर तिरपत रा भाव आता कै वै किणी रै तो काम आवै है।

सत्यप्रकाश अभिभूत अर मगन हुयोड़ा नहर नैं निहार रिया हा। लारै सूं आवाज आयी, ''मैनेजर साब, पटवारी जी बुलावै है, स्हैर जावण खातर।''

उणां मुड़'र देख्यो। अळघी सड़क पर ऊभी गाड़ी री बत्तियां दीखती ही। वै उठ्या अर गाडी कानी आयग्या। गाडी स्टार्ट ई ही। बोलेरो बंद गाडी में आठ जणां री जग्यां ही, पण पांच जणा ही मांय हा। पटवारी बीच री सीट पर हो। अेक आदमी आडो खोल्यो। पटवारी उणां नै आपरै कनै बैठण री अरज करी। वै बैठग्या। नहरी तहसील रो पटवारी हो। घणो ई पीसां वाळो। गाडी अर साथै ड्राईवर अर पतो नीं कांई-कांई मैनटेन करतो हो।

''म्हूं ई रोज स्हैर जावूं हूं। म्हनै कैय देवता, साथै आव-जाव कर लेस्यां।'' पटवारी बात सरू करी।

''आपरी अर म्हारी टाइमिंग बैठै कोनी। आप तो कदैई आ-जा सको हो, म्हनैं तो टेमोटेम ईज आवणो पड़ै।'' सत्यप्रकाश कैयो।

''तो मैनेजर साब, आप ई इसी गाडी क्यूं नी लेयल्यो। आपरी गाडी में आवा-जावाा करो। क्यूं बस में धक्का खावो हो?'' कनै बैठ्योड़ै कैयो, तो दूजोड़ै जोड़्यो, ''तणखा तो आपनै ई चोखी मिलती होसी, पछै क्यूं कंजूसी करो हो?''

''मैनेजर सा! औ अलाणेखां है। इणरो अेक काम हो सा। इणनै ई केसीसी कराणी है सा। जमीन खातेदारीसुदा है अर है ई पूरी पच्चीस बीघा। अेसबीअेस रै खाळै पर है। दोनूं फसलां हुवै है।'' पटवारी मुद्दे पर आयो। औ...जदै इज वानै बुला'र गाडी में बिठायो है ताकि अहसान कर फायदो लियो जाय सकै।

''अबार तो म्हारो बजट पूरौ होयग्यौ है। आगलै म्हीनै पतो करस्या। होय सक्यो तो कर देसूं।'' सत्यप्रकाश सरलता सूं जबाब दियो।

''इस्यो है मैनेजर साब, जो लेण-देण व्है, म्हनैं बता दिराया, होय जासी। पण इणरो काम कराणो है।''

सत्यप्रकाश रो मूंडो कड़वो होयग्यो, ''म्हैं कीं नीं लिया करूं।'' वांनै रीस तो घणी आई पण उणा माथै जाहिर नीं कर सकता हा। जद सगळा कैवै है तो अै लोग ई ऑफर करसी। इण में इणां रो कांई दोस!

''साब, म्हारै सूं संकोच करण री जरूत नीं है। म्हैं ई मैणत करूं हूं तो ऊपर सूं कीं लेवूं ईज हूं। आपां नै ई आपरै अफसरां कनै कीं पूगाणो पड़ै है। सूखी तनखा पर तो पळ लिया टाबर! आज रै जमानै मांय कांई-कांई नीं चाईजै है टाबरां नैं।'' पटवारी माहौल नैं हळको करण री कोसिस करी।

''आज री टेम में कोई अछूतो कोनी, कोई खुल्लम-खुल्ला लेवै है, कोई ईमान रो बच्चो बण'र।'' गाडी में बैठ्योड़ै अेक जणै कैयो तो दूजोड़ै जोड़्यो, ''भेड़ पर ऊन कोई कोनी छोडै। कागला सगळा काळा ईज व्है है।''

''आपनैं आपरै बेटै नैं सेट करणो है। कोई न कोई बिजनस करास्यो ईज। उण खातर पईसा नीं चाईजै कांई? पईसा नीं बणास्यो तो कियां सेट करस्यो उणनैं? बिना पईसा कांई व्है है। आ तो जाणो ईज हो आप।'' अै लोग सत्यप्रकाश रै बारै में सब जाणता हा। वो कठै रैवै है, घर में कुण-कुण है, कुण रिस्तेदार है, कुण बेली है, किणरै साथै उठ-बैठ है।

''तो इण खातर म्हैं रिस्वत लेसूं कांई?''

''जद कीं लेवणो ईज नी है तो क्यूं टाळो हो। कर दो नीं इणरो काम।''

''अबै अेक आदमी खातर कांई तो बजट। इतरो तो निकळ ई जासी।''

''तो कालै आय जासी औ। कागज तो देय दिरावो, त्यार करण में ई टेम लाग जासी।''

सत्यप्रकाश खिड़की सूं बारै देखण लाग्या।

 ISSN : 2320-0995

थोड़ी जेज अबोलो पसरग्यो।

''साब, म्हारै डाफी आयोड़ी है। आप जो फरमास्यो म्हैं कर देसूं।'' अलाणै देख्यो बात यूं ई खत्म हुय रैयी है।

''म्हासूं हाथ मिला ल्यौ साब, आप ई राजी अर म्हैं ई राजी। अेकला सीधा-सीधा लेण में रिस्क है। म्हारै थ्रू लेण में कीं रिस्क नीं है। जिणां नै म्हैं भेजां वांरो काम कर दीजो। चार पईसा आप ई बणाओ अर म्हैं ई बणाल्यां। आप तो जाणो ईज हो, अै गाडी-घोड़ा इयां ई कोनी चालै।''

''माफ करज्या पटवारी जी, म्हैं औ काम नीं कर सकूं।'' सत्यप्रकाश आपरी आवाज नैं कठोर करतां कैयो।

''पटवारी जी, साब तो बडा खिलाड़ी है। अेकला ईज डकारणी चावै।''

''यांरा तो पैलां सूं ई अेजेंट बण्योड़ा है। वांरै थ्रू ई लेवै, आपां रै थ्रू नीं।''

''म्हारो कोई अेजेंट नीं है। म्हैं किणी सूं पईसा नीं लेवूं।'' सत्यप्रकाश रो धीरज जबाब देवण लाग्यो। गाडी में हळकी-सी हंसी गूंजी।'' लोग तो आपरै नाम पर पईसा खा रिया है। इतरा तो भोळा आप ई नीं हो।''

''खावता हुवो तो खुल'र कैवो नीं म्हारा पटवारी जी ज्यूं कै भाई लेवूं हूं, तो लेवूं हूं। औ तो दुनिया रो दस्तूर है। इणमें छुपाण वाळी कांई बात है।''

''नीं, साब पईसा ई खासी अर हरिशचंदर ई बण्या रैसी। ... हुंअ!''

अबै सत्यप्रकाश रो गाडी में बैठणो मुस्किल होयग्यो। मन करज्यो कै चलती गाडी सूं कूद जावै। इसी बात नीं है कै लोगां उणां नैं ऑफर नीं करज्या हा। केई बार करज्या, पण उणां लिया ई नीं अर बुरौ ई नीं मान्यो। बिना पईसा लियां काम ई कर दियो, पण इत्तो जलील तो कोई नीं करज्यो। पईसा नीं लेय'र काम करण री लोगां मूंडां पर तारीफ तो करी, पण बारै जाय' डोफो ईज कैयो। उणां सुण्यो, पण बुरो नीं लाग्यो। वांरो मानणो हो कै आ मनगत तो आज रै माहौल री उपज है, किणी नैं दोस नीं देवणो चाईजै। रिस्वत लेवण वाळो दबंग सातिर अर हुंसियार है, जिको नीं लेवै वो डरपणियो, सीधौ अर डोफौ है।

सत्यप्रकाश थोड़ी जेज ताफड़िया कै स्हैर आयग्यौ। वां पटवारी नै राम-राम करज्या अर सटकै चाल पड़्या।

चाल तो अेकला रैया हा, पण वांनै लागतो हो कै वै सगळा ई गाडी सूं निकळ'र वांरै साथै-साथै चालै है। चाल ई नीं रैया है, कंधा अर पीठ पर सवार होयग्या है। उणां रै आगै आय आय'र चिड़ा रैया है। उणां साम्हीं आंगळी कर-कर'र दांत काढ रैया है। उणां वां सूं पीछो छुडा'ण खातर कांधा झटक्या, जाणै कांधां चढ्योड़ां नै हेठा पटक्या हा अर छेका-छेका चालण लाग्या। रास्तै में लाला री दुकान पड़ती ही। वै बठै सूं किराणो लेवता हा। फुरसत में घड़ी-भर हाल-चाल ई पूछ लेवता हा। लाला सायणा हा। कदै थोड़ी हंसी-मजाक ई कर लेवता हा। आज माथो भारी होयग्यो हो। वै लाला कनै रुकग्या। चालो चाय पीय'र चालां। वै बठै ईज बैठग्या।

लाला हाल-चाल पूछ्या। चाय मंगाई। घणी आस भरी नजर सूं वांनै देखतां लाला बोल्या, ''म्हैं अेक प्लॉट लियो है। म्हनैं दस लाख रुपिया चाईजै। म्हैं म्हारी गांववाळी जमीन बेच'र थनै देय देसूं। जिको ब्याज बणै वो लेय लीजौ। वैवार री बात है।''

''भाई म्हारै कनै दस लाख कठै पड़िया है।'' सत्यप्रकाश फीकी-सी हंसी हंसतां कैयो।

''यार देवणा व्है तो दे, नीं तो आ मत कैय कै म्हारै कनै है कोनी। बैंक में मैनेजर है। वा ई नहरी बैल्ट में। हुंअ! कैवै है म्हारै कनै कठै है पईसा!''

''थारी सौगन। थारै सूं कांई छुपाणो। वाकई म्हारै कनै पईसा नीं है। तणखा में इत्ता भेळा नीं व्है। ऊपर सूं म्हैं कीं लूं कोनी।''

''तो लिया करै नीं। नहरी बैल्ट में अर इसी पोस्ट पर रैय'र चार पईसा नीं बणासी तो थारै जिसो कोई डोफो नीं देख्यो। देख, जो टेम अर पईसै री कदर नीं करै, टेम अर पईसो ई उणरी कदर नीं करै। तूं तो समझदार आदमी है।''

''समझदार दीखतो डोफो आदमी हूं।''

लाला हंस्या, ''इतरो ई डोफो नीं लागै। म्हांनै बणावै तो ठाह नीं।''

चाय आयगी अर बात चाय री चुस्कियां में बदळगी।

घर में आया जित्तै उणां रो डील रोजीना ज्यूं टूटतो हो। आज तो मन सूं ई थाक'र चूर होयग्या। ब्रीफकेस अेक कानी राख्यो अर सोफै माथै पसरग्या। थाकेलो इस्यो हो कै हाथ-पग अर डील जठै पड़्या बठै ईज रैयग्या। उणां नै हिलावणा मुस्किल होयग्या। इयां ईज व्है है। थाक'र पाछा आय आपनैं इयां बगाय देवै जियां नगरपालिका वाळा मर्‍योड़ै कुत्तै नैं बगावै। हाथ कठै, पग कठै, मूंडो कठै। आडा-अंवळा। टूट्योड़ा-बिखर्‍योड़ा।

थोड़ी जेज यूं ईज पड़्या रैवै, पछै होळै-होळै चेतौ आवै। हाथ-पग-डील हिलण लागतो—हवै, जींवता तो हां। घरआळी पाणी लेय आवती। चाय लेय आवती।

लारलै छह महीनां सूं औ ईज रूटीन हो। जद सूं अठै पोस्टिंग हुई ही, उणां रा दिन इयां ईज बीत रैया हा। माथै में भार, झूंझळ, बेचैनी रैवती तो डील में स्थाई थाकैलो अर टूटन। मन में कदै निचिंतता, बेफिक्री, बेपरवाही, आजादी मैसूस नीं करी। हमेस विचलित, बेचैन अर चिंतित। पण जद किणी जरूरतमंद करसै रो काम कर लेवता तो वांनै घणौ सुकून मिलतो। करसै अर उणरै परिवार री आंख्यां में ओसाण रा भाव दीखता तो खुद नैं दुनिया रो सगळां सूं अमीर अर भागवान आदमी मानता। अै भावनावां पईसां सूं नीं मोलाईजै। अणमोल व्है।

आज रै जुग में आदर, मान अर नेह सूं कीं नीं मिलै। बजार में भावनावां रो कीं मोल नीं है। जद ईज तो संस्कार, नेह, मान, आदर अर रिस्ता आद अभौतिक सबदां रै आगै मूल्यहीनता री स्थिति आयगी है, क्यूंकै कीमत तो भौतिक चीज री हुवै है। जो भौतिक नीं है, उणरी कीं कीमत नीं है। आ ईज बजार री फितरत है।

घरआळी चाय देय'र हळकी-सी मुळकी। आज कीं खास बात कैवणी चावै है, जद ईज इत्ती चौड़ी मुळक आयी है। नीं तो बिना बात तो कोई इत्तो मुळकै कोनी। घरआळी आपनैं सुणण नै त्यार करी। घरआळी बोली, ''संजू नै परमसुख पांच हजार रुपिया देयग्यो है।''

''पांच हजार!''

''नत्थू नांव रै किणी करसै री केसीसी करणी है।''

'' थनैं ठाह है नीं कै म्हैं लेवूं कोनी। थूं उणनैं ना क्यूं नी दियो।'' वांनै रीस आवण लागी।

''सारी दुनिया लेवै है। आपां किणी सूं मांग्या कोनी। वो खुद ई देयग्यौ है। घरां आई लिछमी नैं ठोकर तो नीं मारीजै।''

''अरे आ कोई लिछमी है? आ तो रिस्वत है।''

''है तो है। इसी नौकरी में चार पईसा नीं बणास्यो तो कद बणास्यो! समाज में बैठ्यद्य हां, पचासूं जरूरतां व्है। हाथ गीलो रैसी तो सब काम ठीक होसी।''

''पखस जरूरतां राखो ईज क्यूं हो। तनखा सूं काम चाल रैयो है। पछै क्यूं नाहक किणी सूं लेणा। कोई राजी-राजी तो पईसो किणी नैं देवै कोनी।'' सत्यप्रकाश कैवतां ईज हा कै संजय कमरै में आयो। संजय नैं देखतां ई वां उणनैं कैयौ, ''थूं पईसा क्यूं लिया?''

''तो कांई होयग्यो? आप केसीसी करस्यो तो उणनैं फायदो होसी। अेक तो कम ब्याज रा पईसा है अर दूजो फसल बीमे रो लाभ। बीमे रा बैठै-बैठै खासा रुपिया मिल जावै। उण मांय सूं कीं आपां नैं देय देवै तो कुणसो निहाल करै है। खींसा सूं नीं जावै उणरै।''

''औ हक तो करसै रौ। सरकार उणनै फायदा देवै है। बिचाळै आपां कुण हुवां हां लेवण वाळा।''

''म्हैं कुणसा मांगण गिया हा। उणनैं इत्तो फायदो मिलै है, उण मांय सूं वो राजी-राजी कीं देवै है। इणमें उणरो कांई लागै है। आप उणरो काम करो हो, इण रा दो पईसा उण देय दिया तो कांई होयग्यो।''

''काम करण री बैंक तणखा देवै है।''

''घणा हरिशचंदर मत बणौ। जिसो जमानो व्है बिसो काम करणौ पड़ै। कोई तगमो मिलण वाळो नीं है ईमानदारी रो। चार पईसा कनै होसी तो कोई पूछसी। नीं तो लोग हंससी। डोफो समझसी।''

''पईसा चाइजै है तो मेहनत करौ। कोई काम धंधो करो। इयां कदैई लपेटे में आयग्या तो जेळ री हवा खावणी पड़ जासी।''

''म्हनैं ठाह है, अै म्हारै सारू कीं करणिया नीं है। रोजीना डरता ईज रैवै जाणै अेसीबी वाळा इणां रै ईज लारै पड़्योड़ा है।''

''थू पांच हजार लाय दे। डरपोक समझो या डोफो। म्हैं रिस्वत नी लूं। भण्या-गुण्या मोट्यार हो। मैणत करो। कंपीटीसन दो। कोई काम-धंधो करो। म्हारै सूं क्यूं उम्मीद करो हो कै म्हैं उमर भर थांरी पूरती करतो रैवूं। करणो कीं नीं, चाईजै सारौ ई है। बाइक, मोबाइल। आयै

दिन होटल। पीज़ा, बर्गर, ड्रिंक्स। मैणत रै नाम माथै सिफर। दस बज्यां उठै। करै कांई है दिन भर, आवारागर्दी। बिना कीं करयां मिळै है नीं! दुनिया इत्ती सरल नीं है। सेर री दाढ में रैवै है पईसा, सौरा नीं है कढावणा।''

''अजी बंद करो आपरो भासण। आप सूं तो कीं व्है कोनी। लाग्या बापड़ै दीकरै नैं दाड़ण।'' घरआळी पग पटकती दूजै कमरे में गई परी। संजू ई सटकै खिसकग्यो। सत्यप्रकाश हांफता सोफै मांय धंसग्या।

छह महीनां पैलां जद वै अठै आया तो उणां सूं घणी उम्मीदां ही। सगळां री आवाज नरम ही। संबोधन में सलीको हो। ज्यूं-ज्यूं लोगां नैं लागण लाग्यो कै औ आदमी काम रो कोनी, आवाज करड़ी अर व्यौहार में उपेक्षा बधती गई। घरआळा ई नीं, समाज, बेली अर आफिस में ई। जदकै टारगेट पूरा हा, पण सीनियर राजी नीं हा। वांनै उणसूं 'ज्यादा' री उम्मीद रैवती। डिपोजिट, अेडवांस, अेनपीए, सै ठीक हा, पण लाइफ इंस्योरेंश घणो नीं कर पावता हा। आईआरडीअे रै नियमां सूं सिर्फ प्रशिक्षित लाइसेंस सर्टीफाइड व्यक्ति ही खुद पूरी समझाइस कर पॉलिसी बेच सकै है, पण अधिकारी चावता हा कै सत्यप्रकाश आपरै परभाव सूं पॉलिसी बेचै अर सीआईअेफ (सर्टीफाइड इंस्योरेंश फैसिलेटर) री जग्यां हेड आफिस में बैठ्योड़ा वांरा नाम लिख दे जिकां नैं इस्या सर्टीफिकेट मिल्योड़ा हा। वो नीं तो साखा में आवै नीं मिल'र समझाइश करै, पण कमीशन खाण नै मैनेजरां माथै अणूतो दबाव देवै। अेक अजीब नियम हो, कर्मचारी खुद तो सीआईअेफ बण सकै है, पण उणरौ कोई रिस्तेदार नीं।

अठै कमीशन री बंदरबांट सीआईअेफ सूं लेय'र अेजीअेम, डीजीअेम, जीअेम, सीजीअेम, अेमडी अर चैयरमैन तक व्है। फोरेन टूर, लाखां रो कमीशन। गजब रो गोरखधंधो चालतो हो। मैनेजरां पर दबाव देय'र, गाळियां काढ पालिसियां बिकवाई जावै। मैनेजर कोई सी ई पॉलिसी बेचै, हेड आफिस में टिक उणी माथै करीजै जिणमें कमीशन घणो मिलै। लोगां नैं समझावणो, फेस करणो मुस्किल होय जावै, पण हेड आफिस नै कांई मतलब। थे जाणो थांरो काम जाणै। टेक्टफुली हेंडल करो।

लारलै दिनां अेजीअेम आपरै दीकरै, बींदणी, दीकरी, दामाद अर नाती पोतां साथै बैंक रो टूर बणाय घूमण आया। होटल, गाड़ी, डेजर्ट सफारी सगळा इंतजाम सत्यप्रकाश रै जिम्मै हा। परिवार खरीदारी करी सो अलग। सगळो खरचो अेक लाख रो होयग्यो। सत्यप्रकाश अेक लाख रो बिल बणा'र भेज दियो। बिल मिलतां ई अेजीअेम कपड़ां सूं बारे आयग्यो। सत्यप्रकाश कनै तुरंत फोन आयौ। बात करण खातर मोबाइल कान पर राख्यो तो लाग्यो जाणै अेजीअेम मोबाईल री कीमी सूं निकळ'र कान मरोड़ रैयो है। भरपूर गाळियां मोबाईल री कीमी सूं उडेल दी, ''थनै अेग्रीकलचर ब्रांच में पोस्टिंग दी ही। बठै थूं कित्ता पईसा बणा रैयो है, म्हांनै सब ठाह है। थू म्हांनै मूरख समझै है! ओवरस्मार्ट बणण री कोसिस मत कर। थूं अबार जकी देखी है, म्हैं आं गळियां में खेल चुक्या हां। लाइफ इंस्योरेंश करै कोनी। अेडवांस कर खुद पईसा बणा रैयो है, म्हैं जाणूं कोनी कांई! म्हनैं बिल भेजै है। म्हारै कनै थांरी सब रिपोर्टां है। म्हैं थनै समझदार समझतो हो। थूं तो साव डोफो निकळ्यो। म्हैं आपरी लिस्ट सूं थांरौ नाम काट दियो

है। थूं किणी काम रो कोनी। थारा बोरिया-बिस्तर बांध लै। ट्रांसफर आर्डर भेज रैयो हूं। इसी जग्यां पटकस्यूं कै नौकरी करणो भूल जासी।''

सत्यप्रकाश जाणता हा, बिल पूगतां ई अेजीअेम रीसां बळसी। पण वांरै कनै दूजो कोई रस्तो नीं हो। का तो वै पईसा खावै अर कै बोलाबोला बिल चुकाय दे, नीं तो गाळियां अर ट्रांसफर खातर त्यार रैवै। उणां दूजो रस्तो चुण्यो। छह महीनां में दूजो ट्रांसफर होसी तो घरवाळा ई उणां नै ई दोस देसी। अेडजस्ट नीं कर सकै। जिद्दी ठूंठ है। ठाह नीं कित्तो भुगतस्यां इणां रै लारै।

दूजै दिन सत्यप्रकाश परमसुख नैं बुलायौ। वो आपरी गाड़ी में वांनै बैंक लेयग्यो। उणां नत्थू नैं ई कागजां समेत बुलायो। नत्थू रै साम्हीं ईज उणां परमसुख नैं पांच हजार रुपिया पाछा दिया। नत्थू रो मूंडो उतरग्यो। उणनैं लाग्यो, अबै साब काम नीं करैला। जिणां रो काम हुयो हो, नत्थू वांनै पूछ्यो हो। किणी कैयो, ''साब ईमानदार आदमी है, किणी सूं पईसा नीं लेवै।'' पण केई कैयो, ''लेवता होसी।''

''थूं कित्ता दिया?''

''हुंअ! म्हारै सूं कांई लेसी! म्हैं पईसा देय'र काम कराण वाळां में सूं नीं हूं। इत्तो तो दम राखूं हूं।'' नत्थू रै कीं समझ में नीं आय रैयो हो।

सत्यप्रकाश उणां रो चैरो बांच रैया हा। उणां कागज लिया अर लोन प्रोसेस करण लाग्या। परमसुख उणां नैं हिकारत सूं देख्यो। उणां रै डोफापणै पर मन-मन में हांस्यो अर गाडी लेय पाछो स्हैर निकळग्यो। जद कै सिंझ्या रो पाछो आवण रो प्रोग्राम बणा'र आयो हो। सत्यप्रकाश नैं उणरै जावण री ठाह पड़ी तो वांनै अचूंभो नीं हुयौ। नत्थू नैं बिस्वास नीं हुयो कै साब पईसा ई नीं लिया अर काम काम ई कर दियो। वो सत्यप्रकाश रै पगां लागग्यो। सत्यप्रकाश ना-ना करता रैयग्या। औ कोई पैलौ मौको नीं हो। केई लोग काम हुया पगां लागै, वै असहज हुय जावता। वांनै खुसी होवती कै वै आखरी आदमी खातर कीं कर पाया। धन्य होयग्या, नीं तो इण जीवण रो कांई मतलब!

बैगा ईज उणां रा ट्रांसफर आर्डर आयग्या। रिलीवर ई आयग्यो। जिण दिन वै रिलीव हुया, गांव अर ओळै-दोळै रा केई लोग माळावां, साल अर साफां सूं वांनै लाद दिया। आप-आप रै सबदां में वांरी तारीफ ई करी। इसी विदाई किणी री नीं हुई। उणां रो रिलीवर अचूंभै सूं उणां नैं देख रैयो हो। बोल्यो, ''लोग आपरी घणी इज्जत करै है। इस्यो पैलां कदैई नीं देख्यो। उणां मुळकता थकां कैयो, ''आ ईज तो म्हारी कमाई है।''

उण दिन घणी काळी धूड़ भरचोड़ी झांख आई। हाथ नैं हाथ नीं सूझतो हो। तो ई सब जणा उणां नैं सड़क तांई छोडण आया। नहर रै पाणी माथै धूड़ री चादर बिछगी। घोर अंधारो छायग्यो हो। बायरै में सरणाटा गूंजता हा। सब जणा रूंखां री ओट में हुयग्या। झांख कित्ती ई काळी अर धूड़ भरियोड़ी ही, पण उणमें ठंडै बायरै री छुअन ही। इसी जिसी नत्थू रै पगै लागण में ही।

❖❖

पूर्णिमा मित्रा

परफेक्ट होम

शीला जी नैं बारणै ऊभी देख मृणाल अपणायत सूं बांनै आपनै घर मांय लेयग्यो। अेक-अेक कर डाइनिंग रूम, किचन, बेडरूम, बाथरूम अर गेस्ट-हाऊस दिखायां पछै इतरावतो बोल्यो, ''पोती रै ब्यांव रो नूंतो देवण सारू आयग्या, पण म्हारै गृहप्रवेश रै मौकै नीं आया। सगळा मैमान म्हारै घर अर पार्टी री तारीफ कर रैया हा। साची बताया आंटी, अैड़ो आलीशान मकान इण कॉलोनी मांय है कोई दूजो?''

शीला जी नैं मून देख निशा गीरबै सूं बोली, ''फरस री टाइल्स अर सेनेट्रीवियर रो सैंग मैटेरियल अेक्सपोर्ट क्वालिटी रो है। मॉड्लर किचेन भळै मुंबई सूं मंगायो है। पण औजूं थे म्हारो मिंदर तो देख्यो ई कोनी।'' कैवती-कैवती निशा, शीला जी नैं मिंदर कनै लेयगी। संगमरमर मांय पच्चीकारी री मनमोवणी सजावट सूं सज्योड़ी भींतां रै मांय मां भगवती री भव्य मूरती विराजित ही।

शीला जी नैं पाखाण पूतळी दांई मूरती नैं निरखतां देख मृणाल अर निशा अेकै सागै बोल पड़्या, ''आंटी जी, है नीं म्हारो मकान अेकदम आलीशान। स्टाइलिश अेंड अेकदम परफेक्ट। पूजाघर भी अेकदम सेपरेट।

''बेटा, साची कैवूं, थारो मकान फगत आलीशान होय सकै, परफेक्ट नीं। जठै माटी री देवी मां खातर, संगमरमर रो शानदार मिंदर थरपीजै अर जलम-देवाळ मां, खंडहर जैड़ै घर मांय जवान बेटी रै सागै रैय'र उमर रा दिन ओछा करै, बीं मकान रै धणी रो मकान कोरो मकान ई रैय जावै, घर कोनी बाजै।'' गळगळी होय'र शीला जी बांनै ओळमो दियो। मृणाल अर निशा चमगूंगा-सा, शीला जी रो उणियारो जोवण लाग्या।

❖❖

ठिकाणो :
अे-59, करणी नगर
नागणेची रोड
बीकानेर (राज.)
मो. 8502996144

ISSN : 2320-0995

गैलो

—सुणो हो। उत्सव रै ब्यांव री तिथि तै हुयगी है।

—थांनै घणी-घणी बधाई।

—म्हैं तीनूं बैनां फैसलो करयो है कै नेग मांय बनारसी साड़ी अर सोनै री चैन ई लेस्यां। रिस्तेदारां अर उत्सव रै सागड़द्यां सारू गरम कांबळ अर गिफ्ट-पैक। बस, थांसूं अेक अरज है कै इण मामलै मांय आपरी टांग्यां मत अड़ाईजो। अेक ई भाई है, म्हैं तो जी-भर दायजो लेस्यां।

—भगवान री किरपा सूं अै सैंग चीजां थे आपरै पईसां सूं मोलाय सको हो, फेर नेग रै नांव पर छोरी वाळां नैं क्यूं तळो हो।

—ल्यो, करलो बात। म्हारै अेक ईज भाई है, फेर कद इस्यो मौको मिलसी?

—ब्यांव सूं पैली तो थे सगळा दायजो लेवण वाळां नैं कोसता रैवता हा। कम दायजो मिलण रै भय सूं कित्ता छोरा थांनै रिजेक्ट कर दिया हा। भूलगी कांई बै सैंग बातां?

—ना सा, अेकदम नीं भूली। जद ई तो मौको मिलतां ई म्हैं अर पापाजी मिल'र दायजै री आखी फड़द बणा'र छोरी वाळां नैं थमाय दी।

—उत्सव इण रो विरोध कोनी करयो?

—बो थांरै जिस्यो गैलो थोड़ी ई है, जिको बिना दायजै रै सिंपल मैरिज करैला।

—अछ्या भागवान! म्हैं थां जैड़ा स्याणां सूं गैलो ई ठीक हूं।

❖❖

हिस्ट्री रिपीट इट सेल्फ

ज्यूस सेंटर रै साम्हीं ऊभा खटपटिया जी नैं ओळखतां ई राधेश्याम जी साइकिल सूं हेठै उतर्या। खटपटिया रो उदास चैरो देख राधेश्याम जी अपणायत सूं पूछ्यो, ''कांई बात है, डाक्टर साब, इत्ता बैगा ई छोटोड़ै बेटै रै घर सूं पाछा आयग्या? स्यात थारो मन बठै कोनी लाग्यो हुसी?''

''नीं यार, मन तो म्हारो बठै घणो ई लाग रैयो हो। बस, मिसेज नैं बींदणी सूं अेक जबरी सिकायत ही।'' कैय'र खटपटिया गैरो निसकारो न्हाख्यो।

''बडोड़ी बींदणी दांई छोटोड़ी बींदणी भी भाभीसा नैं घर रो सैंग काम करावती होसी? थां दोनूं नैं टैमसर खाणो नीं देंवती होसी?'' राधेश्याम जी अंधारै मांय भाटो बगावता-सा बोल्या।

''नीं माटसाब, बींदणी ल्याण तो म्हारो घणो ई खयाल राखती ही। बस, सगळां सूं कैवती फिरती कै अबै तो म्हारा सासू-सुसरो म्हारै अठै ईज रैवण सारू आयग्या। जे बींदणी कैवती कै म्हे लोग मम्मी-पापा रै सागै रैवण लागग्या हां, तो म्हारो काळजो कित्तो खुस होवतो ? मिसेज रो काळजो तो नीं बळतो रैवतो।'' खटपटिया जी सिकायत करता थका बोल्या। बांरो रोवणखारो चैरो देख'र राधेश्याम जी री आंख्यां रै साम्हीं तीस बरसां पैली रा चित्राम घूमण लाग्या।

''कदैई अैड़ी स्थिति थांरै, माईतां री भी ही। जद बियां रो काळजो नीं दुखतो ? बै भी मन ई मन यूं ईज मसीजता होसी ?'' राधेश्याम जी ओळमो दियो।

आभै कानी जोवता खटपटिया जी पड़ूत्तर दियो, ''आ बात तो म्हैं कदैई सोची ई कोनी।''

''ईं वास्तै ई तो कैवै है कै हिस्ट्री रिपीट इट सेल्फ। बी हैप्पी, टेक केयर।'' कैय'र राधेश्याम जी साइकिल पर फुरती सूं सवार होय'र आगै निकळग्या।

❖❖

भै

दिनूगै बाग मांय सैर करती बगत अणची बाई री निजर मिली माथै पड़ी। फेर कांई हो, बा गैगी-सी बीं रै कनै जाय'र अपणायत सूं बोली, ''बधाई हो मिली। कुंकुं-पत्री तो घणी फूठरी छपवायी है, पण थारो कन्यादान कुण करसी ?''

हरख सूं मुळकती मिली पड़ूत्तर दियो, ''पापा, और कुण!''

''थनैं ठाह कोनी बेटा। आपां रै समाज मांय मांगळिक कामां मांय विधुर अर विधवा री मौजूदगी घणी असुभ मानीजै।'' अणची बाई मिली नैं चेतायी।

मिली करड़ी निजर अणची बाई माथै घाल'र कैयो, ''आंटी, टाबरां खातर माईत, माईत ई हुवै—विधुर या विधवा नीं। मम्मी रै सुरगवास हुयां पछै पापा ई म्हनैं इत्ती मोटी करी है। म्हारै माईतां री म्हैं अेकूकी औलाद हूं। अमंगळ रै भै सूं म्हैं म्हारै पापा नैं कन्यादान रै मौकै माथै अळगो कीकर राख दूं ?''

आ सुणतां ई अणची बाई री नसड़ी सरम सूं हेठै झुकगी।

❖❖

अनुसूया चारण

म्हारा दा

''डॉक्टर साब इयां कांई करो, ओजूं तो म्हैं फगत 67 साल रो हुयो हूं अर थे बार-बार बूढो-बूढो कैवण लाग रैया हो। म्हैं कोई बूढो कोनी, अजै तो दबक्यां कूदूं।'' दा रै मूंढै सूं निकळी आ बात सुण'र डीडवाना रै बांगड़ अस्पताळ रा डॉक्टर जी.के. शर्मा जी अर वां रै चेम्बर में ऊभा मरीज अर अटेंडेंट सगळा हंसण लागग्या। म्हनैं ई हंसी आवण ढूकी पण म्हैं हंसी नैं रोक'र डॉक्टर साब सूं बोली, ''हां! डॉक्टर साहब ओजूं तो म्हारा दा कंवारा काचा टाबर है, आंनैं बूढा मती कैवो।''

डॉक्टर साब ई मुळकण लाग्या, बोल्या, ''आधी बीमारी तो थांरी आ अेक बात सुणतां ई भाजगी, बाकी नैं भगावण वास्तै 10 दिन री दवाई लिखूं।'' पछै डाक्टर साब दवाई री परची बणाय दी।

दरअसल 'दा' सूं म्हारो खून रो तो नेड़लो संबंध कोनी हो, पण मन सूं बां साथै म्हारो रिस्तो घणो नैड़ो हो। बै म्हारै सारू म्हारै पिताजी जितरा ई आदरजोग हा। 'दा' म्हारै परिवार रा जिम्मेदार केयरटेकर हा। बां आपरी ऊमर रो दो तिहाई हिस्सो म्हारै घर री सेवा में बितायो, पण अेक चाकर रै रूप में नीं, घर रै भोत जिम्मेदार सदस्य रै रूप में। संवत 2020 री काती सुदी छठ नैं म्हारै गांव रा ई गाहड़सिंह जी रा बेटा किसन जी नैं म्हारै दादोसा आपरी सेवा चाकरी अर घर रै काम सारू राख्या। दादोसा रो जीवण भोत अनुशासित हो। बै 'सो झकी अर अेक लिखी' में भरोसो करता। हर बात री लिखा-पढी करता। आज ई बांरी बही म्हां सगळां सारू अचंभै रो कारण है। 'दा' री म्हारै घर में नौकरी लागण री लिखापढी भी बही में सुरक्षित है। उण बही री लिखा-पढी नैं देख्यां लागै कै उण टेम रा लोग आज री सरकारां अर समझदारां सूं

ठिकाणो :
'साकेत'
केशव कॉलोनी
स्टेशनन रोड, डीडवाना
(नागौर) राज.
मो. 9928675051

घणा आगै हा। आज सरकारां कानी सूं लागू करीजणियां किरायादार रा कानून, दैनिक दिहाड़ी रा कानून अर घरां में नौकर-चाकर राखण सारू कानून देखां अर दूजी कानी बां बडेरां री व्यवस्था देखां तो लागै कै आज आपां जका कानूनी प्रावधानां अर विधानां री बात करां, आपणां बडेरा तो बां प्रावधानां नैं हकीकत में काम में लेवता आया है। आपां धकोधकी आं बातां नैं नयी बता'र राजी हुवां। पुराणा लोग कमजोर रै हक-हकूक री रिच्छा राखण सारू भोत सजग हा। म्हनैं लागै कै आपां नैं आपणै बडेरां रै जीवण दरसण अर जीवण शैली नैं अेकर ठीक ढंग सूं समझण री दरकार है। विकास रै नाम माथै विणास कानी पांवडा भरतै मानखै नैं पाछो मुड़'र देखणो पड़सी।

आज मानवाधिकार अर श्रमिकां रै अधिकारां री रखवाळी रा झंडा लियां फिरण वाळा लोगां सारू म्हारै दादोसा री बही जियांकली पुराणी बहियां मिसाल बण सकै। म्हारै दादोसा री बही में गाम रा दो मौजीज मिनखां सीसदान जी अर भंवरदान जी री साख साथै आ लिखावट है, ''लिखावट 1 लिख दीनी कलजी नैं गाहड़जी किसन जी जो कि किसन 12 महीनां कलजी के रहेगा, जिसकी तनखा 25 रुपया खुराक कपड़ा कलजी माहवार देंगे। अगर किसन जी बीच में छोड़ेंगे तो कलजी बजाय 25 रुपये के 15 रुपया महीना का हिसाब देंगे। और कलजी बीच में छुड़ावे तो किसन को 30 रुपया महीना के हिसाब से देंगे। मिति काती सुदी 6, संवत 2020। साख 1 सीसदान, साख 2 भंवरदान। निसानी किसन के बाएं अंगूठे की। ब. (बकलम) गुलाबसिंह।''

इण लिखावट में मालिक अर मजदूर दोनां रा दायित्व अर अधिकारां रो साफ-साफ खुलासो है। दो मौजीज मिनखां री साख है। तीजो लिखापढी करणियो 'बकलम' वाळो आदमी भेळो है। आज जको घरेलू नौकरां वास्तै नयो कानून बण्यो है, उणमें भी तो आ ई बात है। खैर!

संवत 2020 रो बो काती सुदी छठ रो दिन म्हारै परिवार सारू इसो सुभ दिन हो कै उण दिन अेक भोत जिम्मेदार अर नयो सदस्य म्हारै परिवार सूं जुड़्यो। अेक बरस सारू नौकरी पर लागणियां किसन जी आपरी लायकी रै कारण परिवार रो अभिन्न अंग बणग्या अर ताजिंदगी बण्या रैया। किसन जी म्हारै रावळै रा ई हा अर म्हारै दादोसा रै पोता लागता। इण कारण वै म्हां बैन-भायां रा बडा भाई हा। म्हारै अठै बडै भाई नैं 'दादो भाई' कैवै। छोटै रूप में 'दादो' अर 'दाद्यो' नाम सूं ई काम चालै। म्हारा बडा भाई साहब चावंडसिंह जी जद बोलणो सरू करयो तो बै किसन जी नैं 'दादो भाई' का 'दादो' री ठौड़ 'दा' कैवणो सरू करयो अर उण पछै घर-परिवार अर गाम रिस्तेदारी सगळी जग्यां किसन जी 'दा' नाम सूं ई जाणीजण लागग्या। म्हारी ऊमर वाळां नैं तो इण बात रो ठाह ई कोनी कै 'दा' रो असली नाम 'किसनदान जी' हो।

दसअसल म्हारा दादोसा कल्याणसिंह जी ब्रिटश आर्मी में नौकरी करता हा। उण टाइम गाडी-मोटर कम ई होवती ही। ज्यादातर आणो-जाणो ऊंठां अर घोड़ां पर ई होवतो। दादोसा अेकर घोड़ै सूं पड़ग्या हा, उण टेम बांरै गोडै मैं जबक आई ही। बा चोट बुढापा मैं बांनै निशक्त बणा दिया। बां सूं उठणो-बैठणो बिल्कुल ही नीं होवतो। बै माळियै में ई रैवता। समूचा दैनिक

काम माळिया में ईज करता। दादासो री सेवा–चाकरी सारू छत पर आवण–जावण सारू दिन रा दसूं चक्कर म्हारा मम्मी नैं लगावणा पड़ता। साथै ई छोटा–छोटा टाबर अर बा घोड़ा नाळ जिसी पतळी म्हारै घर री पेड़ीनाळ, जिणमें आवण–जावण सारू आदमी नैं भेळो सो होय'र चालणो पड़ै। ऊंची–ऊंची पेड़ियां हूती ही। बां पर दिनभर चढणो–उतरणो। छत पर माळियै में म्हारा दादोसा, जका पगां सूं लाचार अर नीचै साव बूढापै सूं घिरेड़ा रामलालजी दादोसा अर दादीसा। म्हारा मम्मी आं तीनूं बडेरां री सेवा में कणां छत पर अर कणां आंगणै में दिन भर चकरीबम बणेड़ा रैवता। म्हारा पापा आपरै पिताजी री इकलौती संतान। बै भारतीय फौज में नौकरी लागग्या। म्हारा दादीसा तो पापा चार साल रा हा, उण दिन ई सुरग सिधायग्या हा। घर में तीन बूढा अर बांरी सेवा सारू म्हारी मम्मी। पापा देस री सेवा सारू सीमा पर चौकसी राखै अर मम्मी आं बूढां रो हीड़ो करण में चक्कर लगावै। दोनूं आप–आपरी ड्यूटी ईमानदारी सूं बजावै। मायतां सूं आपरै टाबरां रो थोड़ोक दुख ई देखीजै कोनी। इण वास्तै दादोसा नैं लाग्यो कै कोई अेक काम वाळो स्याणो टाबर हुवै तो बीनणी नैं थोड़ो सारो मिल जावै। दादोसा आपरी अनुभवी अर पारखी निजरां सूं आपरै ई रावळै रै अेक स्याणै–सीधै टाबर किसनदान नैं चुण लियो अर लिखा–पढी कर'र बांनै राख लिया। दा आपरी कर्मठता अर काम रै प्रति ईमानदारी रै पाण थोड़ा ई दिनां में घर रै हर सदस्य रै दिल में जगां बणा ली। म्हारा मम्मी पढ्या–लिख्या कोनी, इण कारण वां मुंशी प्रेमचंद री 'बड़े घर की बेटी' कहाणी तो कोनी पढी, पण बै म्हारै 'दा' सारू सदा ई कैवै कै 'दा तो बडे घर री बेटी' है। मतलब ओ कै 'दा' जिण दिन सूं म्हारै घर में प्रवेस कर्‌यो, उण दिन बाद इण घर नैं आपरो ई घर मान्यो अर घर री माण–मरजाद रो पूरो ध्यान राख्यो। परिवार रै सुख–दुख रा साथी हा। म्हारा पापा 'दा' रै काकोसा लागता। दा वांनैं काकोसा अर म्हारी मम्मी नैं काकीसा ई कैवता, पण म्हारा पापा 'दा' नैं 'ठाकर साहब' नाम सूं ई बतळावता। पग में भलां ई भतीजा लागता, पण ऊमर में 'दा' म्हारै पापा सूं बडा हा इण कारण पापा 'दा' नैं कदै ई तूंकारो कोनी देंवता। म्हारा पापा अर म्हे भाई–बहन कदै ई 'दा' री कोई बात टाळता कोनी अर म्हांनै 'दा' सूं इधको हेत हो। आज 'दा' इण संसार में कोनी पण म्हांरी बातचीत में 'दा' रो कोई न कोई दाखलो अनायास ई आ जावै। म्हैं आजकालै अखबारां में ऊंधीसूंधी खबरां बांचूं जद म्हनैं बार–बार 'दा' याद आवै। कई बार सोचूं कै 'दा' इस्यो कांई कर्‌यो कै बांरै प्रति म्हां सगळां री श्रद्धा बधी। जद फ्लेशबैक में जाऊं तो आ श्रद्धा और ज्यादा प्रगाढ होवती जावै। म्हनैं लागै कै अेक ओपतै मिनख में जका उल्लेखणजोग गुण होवणा चाईजै, म्हारै 'दा' में वै सगळा गुण हा।

'दा' अणपढ तो जरूर हा पण 'अशिक्षित' कोनी हा। वै आपरै दायरै रै समूचा कामां में पारंगत हा। बांनैं चोखी तरै सूं ठाह हो कै कुणसो काम भूंडो है अर कुणसो भलो। कुण मिनख मन सूं आपणो है अर कुण दिखावटी आपणो बणै, इण बात नैं बै भोत आछी तरै सूं जाणता। साची कैवण में कदैई काची नीं ल्यावता। बियां तो दा म्हारै पापा रै अठै नौकरी करता, पण घणी बार बै पापा नैं ई कोई बात पर फटकारण में संकोच कोनी करता अर बांरी बा फटकार म्हारै पापा या म्हां घर वाळां नैं कदैई अखरती भी कोनी। इणरो मोटो कारण ओ हो कै 'दा' रै मन में

कोई खोट कपट या स्वारथ कोनी हो। वै अेक किरसाण रै रूप में खेती-पाती रा पूरा ज्ञाता अर अेक पशुपालक रै रूप में मवेशियां री देख-रेख अर सार-संभाळ रा व्हाला जाणीजाण हा। गाम में जे कोई रो पशु बीमार हुज्यातो तो पशुवां रा डॉक्टर 'दा' ई हा। 'दा' देसी दवाई बताता अर बा दवाई जरूर कार करती। कोई गाय, भैंस, बकरी रै ओळांस आयग्यो हुवै या पछै 'जर' नीं पड़ी व्है तो आस-पास रा तीन च्यार गामा में 'दा' नैं ईज बुलावता। भोळै मन रो भलो मिनख आपरै सांवरियै नैं याद करतो घर-परिवार में काम आवण वाळी चीजां नैं ई मिला-मिलू'र दवाई देंवतो अर दुखियां रो दुख कट जावतो। 'दा' आपरी ऊंडी अवलोकन दीठ अर दयालू सभाव रै पाण पशु-पंखेरुआं री पीड़ रो निदान अर उपचार करणो सीखग्या। बांरै मन में करुणा रो दरियाव हो। जद किणी गाय-भैंस रै ओळांस आद रो समाचार मिल ज्यावतो तो पछै पगां जूती ई कोनी घालता। कोई जात-पांत रो कै आपणै-परायै रो आंतरो बां कदैई कोनी कर्‌यो। 'दा' रै हाथ में इसो हुनर हो कै बांरी दवाई सूं बीमार पशु ठीक होज्यवता।

'दा' नैं पशुवां सूं घणो मोह हो। म्हारै घरै गायां अर भैंस्यां रो धीणो सदीनो ई राखता। दो-तीन धीणेड़ी तो रैवती ई ही। गायां-भैंस्यां वास्तै नोहरै में ठाण अर छप्पर बणायोड़ा हा। 'दा' गायां-भैंस्यां रो दूध काढता, बांरै चारै-पाणी रो बंदोबस्त देखता। बै गायां-भैंस्यां अर बांरै टोगड़िया-पाडियां सूं बातां करता रैवता। बांरै कदै चारै में हाथ फेरता तो कदै टोगड़ियां-पाडियां नैं सहलावता। म्हां टाबरां सूं बात करता बियां ई टोगड़ियां-पाडियां सूं बंतळ करता। बै घर रा पशुवां रो तो ध्यान राखता ई हा, साथै-साथै गाम री सांडसाळा में भी नियमित जावता अर सांड नैं चारो-पाणी देंवता। 'दा' री सेवा भावना तगड़ी ही। म्हारै गाम में अेक सांड खोड़ो हुयग्यो। बी सांड रो तो 'दा' टाबर सूं भी ज्यादा खयाल राखता। अेक दिन गांव में 'दा' नैं कोई कैय दियो कै ई खोड़ियै सांड नैं चारो घाल'र क्यूं चारै रो नास करो। अब औ कुणसो न्याल करसी! 'दा' नैं आ बात सुण'र घणी झाळ आई, पण बां आपरी रीस नैं मांय री मांय दबा ली अर उण आदमी नैं मुळकतां थकां जवाब दियो कै थे ई बूढा हुवोला। उण टेम थारा टाबरां नैं आ बात सिखावणी पड़सी कै आं बीतेड़ा बळदां खातर क्यूं धान रो नास करो। बां आगै आ भी कैयी कै ''म्हैं उण दिन थारो मूंढ़ो देखणो चावूं कै वा बात थनैं कितरी सुहावणी लागै।''

'दा' साची कैणो अर सुखी रैणो री थ्योरी राखता। बांरै कोई राव की सूं मतलब हो ना देव की सूं, बै आपरै काम सूं काम राखता। खरी बात कैवण में बै म्हारै दादोसा सूं भी कोई लाज कोनी करता। म्हारा दादोसा कणां-कणां 'दा' रो मोढो पकड़'र माळियै री पेड़्यां ढळता। पछै घोड़ी रो स्हारो लेय अठी-उठी मिलण-बैठण नै का बैंक सूं पेंसन आद ल्यावण नै जाया करता। बै चोखो खावण-पीवण रा शौकीन हा। रोजीनां कलेवै मे सीरो (हलवो) ईज खावता। दोपारां रा सामान्य साग-रोटी अर छाछ-दही। रात रा हळको खाणो अर दूध लेंवता। अेक दिन बै आपरा संगळिया नैं कलेवा में डुओ (खाटै री राबड़ी) अर बाजरै री रोटी सबोड़तां देखी। बांरो उण भोजन पर जी चाल्यो। बठै तो बै कीं कोनी बोल्या, पण घरै आवतां ई खंखारो कर'र बोल्या, ''किसन! बीनणी नैं कैईजै कै आज डुओ ओलै। (डुवै री राबड़ी बणावण सारू पैलै दिन पाणी, छाछ अर आटो मिला'र अेक बरतण में मेलणो पड़ै। दूजै दिन उणसूं राबड़ी रांधीजै।

छाछ–दही री कमी हुवै, जणा डुवै री राबड़ी बणाईजै।) दादोसा बोल्या, ''आज म्हैं फलाणसी ठाकरां नैं कलेवो करतां देख्या। म्हारो बियांकली रोटी खावण रो घणो मन है।''

'दा' नैं हंसी आवण लागी अर बै हंसता–हंसता ई दादोसा नैं बोल्या, ''ठाकुर साब! बियांकली रोटी तो दूर सूं ई चोखी लागै, अेकर खास्यो तो दुबारै कोनी मांगो।''

दूजै दिन घर में दादोसा रै कैयोड़ै री पालना हुई। डुवै री राबड़ी अर बाजरी री रोटी बणी। डुवै में रोटी चूर'र दादोसा नैं पकड़ाई। 'दा' कैई जकी बात साची हुई। दादोसा अेक सबोड़ो ही लियो अर बोल पड़्या, ''बाळ आगी ईं थाळी नैं, म्हारै तो बा रोजीना आळी तासळी ई भरल्या।''

'दा' आपरी कैयोड़ी साची होवती देख'र मुळकता पेड़्यां ढळ्या अर म्हारी मम्मी सूं बोल्या, ''काकीसा, म्हैं कैयी जकी ई हुयी। औ डुवो पाछो ल्यो, दादोसा सीरा'ळी तासळी मंगावै।''

'दा' टाबरां रो घणो लाड राखता, पण जे कोई टाबर अणूती जिद कर लेंवतो तो दा नैं झाळ भी कसूती आती। अेकर 'दा' पशुआ नैं चरावण नै खेत ले जावै हा। उणी टेम म्हारी जीजी जिद कर लियो कै म्हैं ई खेत जाऊं। 'दा' जीजी नैं समझावतां कैयो कै आपणै बायां खेत नीं जाया करै। पण जीजी जिद नीं छोड्यो। बोली, ''म्हैं तो जाऊंली अर जाऊंली।''

'दा' नैं अैड़ी रीस आई कै जीजी रो बांवळियो पकड़'र दो पावंडा दूर फेंक दी। जीजी नैं थोड़ी देर वास्तै होस नीं आयो जणा पाछी खुद ई उठाई अर पाणी पायो। मन सूं पछतावो करतां जीजी नैं पाछी प्यार सूं समझाई जणा जीजी मानगी अर घरां आयगी। घटना कोई मोटी कोनी ही पण दुनियां तो आपरै दुख सूं नीं, दूजां रै सुख सूं दुखी है। म्हारै घर में 'दा' रो इयां काम करणो अर लगातार बरसां ताणी रैवणो केई कुचमादियां री आंख्यां में रड़कतो। आज मौको मिल्यो। गवाड़ मांय सूं पेट पकड़्यां–पकड़्यां अेक–दो जणां म्हारै घरै आया अर मम्मी सूं बोल्या कै अेक नौकर री कांई औकात कै बै आपरै बाईसा नैं इयां मारा–कूटो करै। थे 'दा' नैं इत्तो के माथै चढ़ा लियो, अबार बाईसा नैं इयांकला पटक्यां कै प्राण–पंखेरू उड ज्यावता।'' पण म्हारा परिवार रै अेक–अेक सदस्य नैं 'दा' पर प्रगाढ भरोसो हो। इण वास्तै बांरी कोई चाल चली कोनी। मम्मी इत्तो ही बोल्या, ''जरूर बाई कोई गलती करी हुवैला।''

म्हारा मम्मी–पापा बतावै कै अेक टेम बो भी आयो जद दादोसा री बीमारी में घणा रुपिया लाग्या, इण वास्तै घरां रुपिया–पीसां री थोड़ी तंगी–सी आयगी। उण टेम 'दा' नैं ई दो च्यार महीनां तनखा नीं दिरीजी, पण 'दा' कदैई आपरी तनखा रो जिकर तक नीं कर्‌यो। 'दा' आजीवन कंवारा रैया। वां म्हारै परिवार में नौकरी करतां थकां भी आपरै परिवार री जिम्मेदारियां भी पूरै मन सूं निभाई। 'दा' रै अेक छोटा भाई अर तीन बैनां है। 'दा' आपरी पांती री जमीन आपरा छोटा भाई नैं ईज देय दी। बै आपरी बैनां रै भात–मायरां में कोड सूं दो रुपिया लगावता। दा रा अेक बैन म्हारै सासरै ईज परणायोडा है। बांरै बेटै रो ब्याव हो जद 'दा' मायरो भरण आया। बांरी बैन जद बांनै टीकण लाग्या तो 'दा' बोल्या, ''म्हैं चूनड़ी दो ल्यायो हूं। म्हारली छोटोड़ी बाई नैं ई बुलाओ, बीं नै ई चूनड़ी ओढास्यूं।'' म्हैं आई तो 'दा' म्हनैं घणै लाड सूं

बोल्या ''आ रे म्हारा अन्नुराजा!'' अर आपरै नेही हाथां सूं चूनड़ी ओढ़ाई। म्हनैं 'दा' म्हारा मा जाया भायां जिसा ई व्हाला लागता। 'दा' हर सदस्य री खुशी रो खयाल राखतो। अै छोटी-छोटी बातां ई है जकी 'दा' नैं औरां सूं अलग खड़्यो करै। आपरी काबिलियत अर कर्तव्यनिष्ठा रै पाण 'दा' कद चाकर सूं ठाकर तक रो सफर तय कर लियो, इण रो ठाह ई नीं पड़्यो। आज घर-गृहस्थी रा उतार-चढाव अर लोगां रा राड़-रगड़ा देखूं जद सोचूं कै 'दा' जिसा मिनख आज कठै? म्हैं केई बार विचार करूं कै अेक नौकर री मामूली औकात सूं पूरै गाम सारू सम्माननीय 'दा' ताणी रो औ सफर तय करबा में बांनैं कित्तौ त्याग, समर्पण, अनुराग अर विनम्रता रो परिचै देवणो पड़्यो हुवैला। आज छोटी-छाटी बातां पर थाणा-मुकदमा अर मरण-मारण सारू अड़थड़ै मानखै नैं 'दा' जियांकला मिनखां री जीवणियां पढणी चाईजै। म्हैं तो म्हारै अेक 'दा' नैं ई जाणूं, पण म्हनैं औ पूरो पतियारो है कै इसा मिनख गाम-गाम में हुया है अर आज ई है। सगळा कोई अेक ताकड़ी थोड़ा ई तुलै।

म्हारी भोजायां भी 'दा' नैं पिता तुल्य ही मान्यो। 'दा' उम्र मैं बड़ा हा पण म्हारा भाभीसा अर रावळै री सगळी बिनण्याँ 'दा' सूं बोलती। 'दा' वां सबनैं बेटाजी! ई कैवता। 'दा' घणा बीमार होवता जणा दवाई लेवण सारू डीडवाणा ही आवता। बांनै लागतो कै म्हारा जंवाई सा री डीडवाना मैं घणी जाण पिछाण है इण वास्तै डॉक्टर सावळ चैक करै। अेकर बै डीडवाणा बाँगड़ अस्पताल में भरती हा। वार्ड में डॉक्टर राउंड लेवण आया तो म्हारै पतिदेव सूं हथायां लागग्या। डॉक्टर साहब म्हारै पतिदेव रा मित्र इज हा। अेक बीमार सारू डॉक्टर सूं मोटो कोई नीं हुवै। 'दा' डॉक्टर साहब नै आपरै जंवाई सूं बात करतां देख'र अणूंता राजी हुया। बै म्हनैं अर मम्मी नैं कैवण लाग्या कै ''बाई देख आपणा पावणां री किती जाण पिछाण है। डॉक्टर वां सूं कोई घर रो सदस्य करै जियां हँस-हँस'र बातां करै। म्हैं हँस'र बात टाळी अर बोली कै 'दा' अै हर कोई सूं बात लाग जावै, कोई जाणकारी कोनी। पण 'दा' री इण बात सूं ओ तो सिद्ध हुवै कै वांनैं म्हारै परिवार रो हरेक सदस्य कितरो प्यारो हो।

'दा' जद अंत समय में घणा बीमार हुयग्या तो बांनै रोज गाडी सूं कदै सीकर तो कदै डीडवाणा चैक करवाता। अेक दिन गाम रा कोई स्याणा आदमी कैयो, ''अब आनैं बुढापै में क्यां वास्तै लियां फिरो। क्यूं पईसां रो कूंडो करो। अबै आंनैं घरां ई राखो। अै किस्या पाछा जवान हुवै।'' उण टेम म्हारा मम्मी-पापा बांनैं जकी बात कैयी बा बात 'दा' रै पूरै जीवण री खरी कमाई ही। मम्मी-पापा बां मिनखां नैं कैयो, '' 'दा' रो म्हां पर इतरो फर्ज चढ्योड़ो है कै आंरो राई भर भी फर्ज उतार सकां तो म्हारो जीवणो सारथक हुज्यावै।''

'दा' आपरी नौकरी रै दौरान कदैई कोई छुट्टी नीं ली, पण जद ली तो इतरी लांबी कै पाछा आवण री आस ई नीठगी। 14 नवम्बर, 2015 नैं 'दा' इण भौतिक संसार नैं अलविदा कैयग्या, पण आज ई पग-पग पर बांरी याद आवै। बांरी सेवा-भावना, बांरी हेत-हथायां, बांरी सावचेती, बांरी आपरै काम रै प्रति जागरुकता, ईमानदारी, सपाटबयानी अर रिस्ता निभावण री जुगत उल्लेखण अर आचरण जोग है।

❖❖

भोगीलाल पाटीदार

बेरूपो

सावण ना सड़ाका नै भादरवा ना भडूका, आहू आवै ने म्हूं नाहूं। भादरवो तपी ने आहू महीनो बैही ग्यो अतो। अवै तो वरसात पामणा वजू मावठू आवै तौ वात जुदी है। इस्कूल मांय खावा नी छुट्टी वखतै छोरं कबड्डी ने खो खो खुब रमवा लागं। रमत वारी जमीं अेकदम धुरावारी अती अेटले नेंचे पड़तं तोय लागतु न्हें। मझो आवतो ते कईक तो जाणी-जाणी ने नेंचे पड़तं। रमते कईक वरै कुंणेक अंदाई करतु तो बथमबथा बाथे पड़ी जतं। थोड़ीक वार मांय वैर छोड़ीनै पाछा अता अैम गोठीया थई जता। रमते कैनेक लागी जतु तोय घेरै जाई ने केतु न्हें। इस्कूल मांय अेक थकी पांचवी चौपड़ी नी भणाई चालती अती। इस्कूल पांच वरस पैली खोलणी अती। भणाब्बा वाळा अेके'ज माडसाब। अेटले बफोर नी छुट्टी थकी ई कारेक तो घंटा नी थई जती। गांम नं छोरं घण घेरै जातं रैतं। अमारै जैवं परगम नं छोर कोय ने कोय रमत रमतं। वधारै करीनै खो-खो नै कबड्डी।

अेक दिन माडसाबे हवार नी प्रारथना मांय वात केई कै पंदर दिन पुठै टुरनामेंट थवा नुं है। अैणा मांय आपड़े इस्कूल भी पैली दांण भाग लेगा। अेटले आज थकी आठमां घंटा मांय रमत नी त्यारी करवा नी है। जुदी-जुदी रमते रमवा वाळा रमेंगा नै बीजा दांम छोरा जोवेंगा। आठवो घंटो वाजतं मांय दांम छोरं खेलवा ना मैदान मांय आवी ग्यं। छोरं आपड़ो आपड़ो भैरू बणाववा लागं। म्हूं छेटी ऊभो रयो। कैमके म्हारै तो घेरै जावु अतु। पैलु'ज केयलु अतु के छुट्टी थांत मांय हामा पोगे घेरै आवजै। मकी, हामली कुरी नै बटी नी हरा वाड़वी चालु थई गई अती। हवार नै हांझै इस्कूल थकी आवतं मांय खेतरं मांय जावु पड़तु। आणं

ठिकाणो :
किसनपुरा रोड
सीमलवाड़ा
जिला-डूंगरपुर (राज.)
314403
मो. 9783371267

दाड़ं मांय हरा हंकेलवी पड़ती अती। अेटले घण छोरं इस्कूल नतं आवतं। रमवा नुं म्हारू अे मन करतु अतु पण बापा नो मार काठो अतो। अेटले म्हूं रमवा नुं छोड़ी ने घेरै आवतो रै'तो।

छोरं मांय खार घणो ओय। कईयेक छोरे माड़साब ने साड़ी करी दीधी। बे दिन पुठै माडसाबे म्हनै हादी नै रीस करीनै क्यू, ''आठमो घंटो घेरै जावानो न्हें है। खेल नी त्यारी सारू है। वना त्यारी अे तू टुरनामेंट मांय हरतै रमै। तनै नै तारै नाना भाई नै खो-खो नै रूमाल झपट मांय रमवा खिलाड़ी ना रूप मांय लई जवा ना हो। तू रमेगा तो नवा-नवा दांव पेच सिखेगा। दड़ी रमवा वाळा मांय फुरती आवै। अेटले अवे टुरनामेंट थई जाय तार सुधी घेरै जाय नखै।

वात सांभरी ने मन मांय थ्यु के खेल नी त्यारी तो आमैं रोज करं है। खेतरे नै खळा मांय करं है। दौड़वु, कूदवु नै हावा नुं हेल वात है, पण आवी वात माडसाब ने हरतै केवाय? घरवारं टुरनामेंट मांय जवा देवानं नती। तोय अैणे क्यू है ते अेक-बे दाव रमवा पड़ै। अैम करीनै दिन रोज अैम'ज करतो नै पछै घेरै जतो रैतो। जवा ना च्यार दिन पैल हरेक रमत मांय रमवा वारं छांटीलं छोरं ने केई दीधु के तमारै लाकडं, छांण नै ओड़वा पाथरवा नुं त्यार राखजू। अैणं ने केयु के जवा ना पैला दिन लई आवजू। खावा नुं हीदु काले लई आवजू। हीदा मांय हुं लाववु ई भी वताड़ी नै लखावी दीधु। बीजे दिन सब छोरं वताड़्या परमणै हीदु लई आव्यं, पण म्हूं न्हं लई ग्यो तो माडसाब आंखें काड़ी थका लड़्या। म्हैं बीते-बीते क्यू कै म्हारै घरवारं ना पाड़ै है। तईवरै कोई वधारै न्हें बोल्या पण अैणं नुं मुंडू उदास थई ग्यु। म्हूं अैणं कने हौ खचकी ग्यो।

बीजे दिन परबात मांय माडसाब घेरै आव्या। बापो नै भाई खेतरे जता रुय अता। ई असल थ्यु नेंके बापो वात कापी नाखता। आई अतं अैणं थकी वात करी। आई अे क्यू, ''जौवो सा'ब, म्हारै कनै गऊं नो आटो नै चोखा न्हें है। घर मांय दुजणु नती अेटले घी भी न्हें है। मकी ना रोटला अे घर मांय कारैक करूं हूं। वस्तारी घोर है। हवार मांय भटु ना रोटला करूं नै हांझै मकी के कणकी नीं राब। राब अै छोरं भावण सावण खयं है। कारैक खाधा वना हुई जयं। घर मांय कोदरा तो खावा नती नै गऊं चोखा कैयं थकी लावुं। खाधा-पीधा नै दम वगर नं छोरं नै लई जई नै हुं करोगा? रंमत-गंमत मांय असल मोटं नै गजा वारं छोरं लई जौ। अेक ओय तो हमझ मांय आवै पण बे छोरं नुं हीदु कैयं थकी लावुं।'' म्हारी मंसा जवा नी अती पण हीदा ना लीधै भागी पड़तु देखणु।

थोड़ीक वार माडसाब हुंसमन थईने बैही रुया। अैणं नुं मुंडू वेला ना पाना वजू विलाई ग्यु। आमनु तेमनु जोईनै बोल्या, ''केसर काकी टुरनामेंट तो आपड़े पाहे हेंबेर वारा गांम मांय थाय है। खाली तण दाड़ं नी वात है। चौथै दाड़ै तो पाछा घेरै आवी जंगा। तमारी वात हाची है पण तमारा बे छोरा लई जवा भी जरूरी है। अेटले गऊं नो न्हें ओय तौ मकी नो आटो आली दौ। हंगर नो आटै अेक थैली मांय है ते अैणा भेगो नाखी दयं तौ हेंहुराई जायेगा। घी चोखा न्हें ओय तो कोय वांदो न्हें है कैमके तमारै बे छोरं माथै तौ अमारै गाजं वाजं है। ओड़वा पाथरवा नुं बे भाईयं वेचे अेक चालेगा। अबार वधारै टाड़ पड़ती नती। बीजी वात तमैं गजा वगर नी वात करी है। आ बे भाई अेवी रंमत ना रमतिया हैं के केये जौर लगाड़वु पड़तु नती। अैणा खेल मांय

चकोर नै फुरती थकी दौड़वा नुं है। खो-खो नै रूमाल झपट। आ रमत तो छोरं रोज गांम मांय रमै हैं। अेटले तमै नाफीकरं रयो। तमारै छोरं नै कोय आंच न्हें आववा दउं।''

आई अे थोड़ीक वार विचार करीनै क्यू, ''ठीक है। तमैं घेरै आवी नै आटलं वनं करो हो ते ना हरतै कउं। अेक वात नो खटको राखजू कै म्हारै छोरं नै कुंणै डूखरावे न्हें।'' माडसाबे दाम वात नी हामी भरी नै मुंडू पळकावता थका जता रया। अैणं ने ग्या पुठै आई अे म्हनै हीदु काड़ी आल्यु। लाकड़, छाणं नै हीदु लईनै इस्कूल मांय आली दीधु। तईवरै म्हारै हरक नो पार नतो।

जवा नुं अतु तेनदाड़े गांम नुं बळद गाडू मंगाव्यु। दाम सामान गाडा मांय भरी दीधो। छेतरं नी थैलीये हाथ मांय हाई नै हंगरा छोरा हेंबेर वारा गांम भेगा थई ग्या। गांम वेचे इस्कूल मांय उतारो मल्यो। अेक बीजी इस्कूल ना छोरं नै भी अैयं पड़ाव आल्यो अतो। रात रा हंगरं छोरं अेक टक नुं खावा नुं साथै लाव्यं अतं, अैने खाई ने हुई ग्यं। हवार मांय वेळा उठीनै त्यार थई खेल मैदान मांय पूगी ग्या। उद्घाटण नो जळसो पूरो थातं मांय कबड्डी नी रमत रमवी पड़ी। अैणा मांय जीती ग्या। बफोर मांय खो-खो जीती ग्या।

बीजै दिन हरेक रमत बे-बे वखत रमवी पड़ी। खो-खो मांय पैला लंबर आवी ग्या। तय टैम मांय सांमा वारी टीम नं हंगर छोरं आउट थई ग्यं। अमारै तण खिलाड़ी आउट थ्या। नानो भाई गोरदन नै म्हैं टैम काड़ी नाख्यो। हांझे अंधारू पड़ी ग्यु तो रूमाल झपट नी रमत रई गई। खो-खो जीती ग्या तो दांम छोरा खुस थईनै दौड़ता कूदता पड़ावै आव्या। माडसाबे छोरं नै हाटं नो रस पायो नै मीठी गोळीये खवाड़ी। पछे क्यू, ''खावा नुं झट खाई लेजू। रातरे रंगारंग परदसन मांय जवा नुं है।'' म्हारै सांमु जोईनै बोल्या, ''तारे विचित्र वेसभूसा मांय भाग लेवा नो है। वेसभूसा नी वस्तुये लईनै टैम परमणे इस्कूल मांय पूगी जजै। रंगमंच ना वांहे त्यार थवा नुं है। लम्बर आवतं मांय म्हैं वताड्यु अैम करवा नुं। कईयो लम्बर है ई म्हूं वताड़ी दयं।''

सांसकृतिक गंमत मांय भाग लेवा घेरै आई नै पूछतो अतो कै म्हूं हूं बणूं? कैमके अैणा सारू दांम वस्तुये साथै लई जवी हैं। आई विचार करतं अतं तईवरै मोटो भाई नगजी सांभरी ग्या। रीस करी नै क्यू, ''रंगासामी बणी जा। अैणा मांय आई ने हुं पूछे है? कमीज काड़ी नै उघाड़ा थई जौ। केड़ मांय रूमाल वेंटोरी दो। कपार मांय काळं बे तण टीलं करी दो। अैणा साथै बे हाथ नं बाऊड़ नै गळा कनै लांबं टीलं करी दो। टीलं सारू काळी मेंह आपड़े चिमनी नी घणी है। पोगं मांय ढेचण नेंचे वेला वैटी दो। बायणा मांय हंदेड़ा नुं तण पांखड़ं वारू डारू कापी आलुं। अैनु तिरसूल बणी जायेगा। अजी वधारै जुवे तो बळदं ना घूघरा लई जा। केड़ मांय बांधी देजे। ऊभो रईनै केड़ अलावै तो घूघरा वाजेंगा। हंगरी वस्तुये वना पईसं नी घेरै मली जयं। कैनये लपुचीयं न्हें लेवं पड़ै।'' म्हनै वात जची गई। पैलो लम्बर आववा नो है न्हें। तारै आई ने कैम तवा करूं? आ वात माडसाब नै वताड़ी तो पैल उदास थई ने मुंडू वगाड़ी नाख्यु, पण बीजु कुंणे छोरू त्यार न्हें थ्यु तो म्हारी वात मानी लीधी।

हंगरं छोरं इस्कूल आवी ग्यं। असल जाणकार बे छोरा म्हारै साथै रंगमंच वांहे आव्या। मंच वांहे कुंणेक राम, संकर नै काळका माता बणी र्‍या अता। छोरा बढीया मुकुट नै माळाये पैरावी नै त्यार करता आता। म्हारू मन अैणं नै देखीनै उदास थई ग्यु, पण भाग लेवो अतो अेटले मन मारी ने त्यार थवा लागो। त्यार थवा सारू छोरं कनै चिमनीये अती। कैनेक कने कंडील अती। अमारै तो चिमनी ना उजवारा थकी काम चालतु अतु। अेक छोरो चिमनी हाई र्‍यो। बीजै म्हैं केयु अैम कपार, गळा नै हाथं माथै टीलं करीनै माथा माथै कारू छेतरू बांधी दीधु। म्हैं पोग मांय कुकरपाड़ा ना वेला लपेटी दीधा। केड़ मांय घूघरा बांधी नै त्यार थई ग्यो। काच अतो न्हें अेटले कपार नुं टीलु जोवा न्हें मल्यु। माडसाब आवी ने कईये लम्बरे जावु है ई वताड़ी ग्या अता। छोरं नो लम्बर आवी र्‍यो अतो। म्हूं बैही-बैही ने थाकी ग्यो। खाली बे छोरं म्हूं नै वांदरो बण्यो ओ ई बे बाकी अता। तईवरै म्हारो लम्बर आवी ग्यो।

मन मांय घभरमणी थई रई अती। कैमके आवा मंच माथै कारैये नतो ग्यो। फेर दरसकं मांय मिनख साथै म्हारै इस्कूल नं छोर भी अतं। मंच माथै बे होड़ं मांय गैस बत्तीये उजवारू करी रई अती। मंच माथै जाईनै अेक हाथ मांय तिरसूल नै बीजो हाथ आसरवाद ना रूप मांय ऊभो अतो। तईवरै परदो ऊघड़ी ग्यो। म्हूं सांमै बैठै दरसकं नै देखीने लगार कांपी पड़्‍यो। मुंडू वगड़ी ग्यु। मंच सांमे बैठीलं मिनख थकी तारीये सांभरी ने वधारै कांपवा उं अथमण आवी ग्यु तो घूघरा वाग्या। डील काबू मांय राखी केड़ अलावी तो घूघरा खण-खण वाजवा लागा। दरसक मांय तारीयं नो रणको पड़ी र्‍यो अतो। जैम तारीये वाजी अैम वधारै धूजणी आवी। अेटला मांय परदो पड़ी ग्यो। म्हारै जीव मांय जीव आव्यो। दौड़ी नै मंच वांहे आव्यो तारै सांती पड़ी। डील माथै पसीना ना झाबा झाबा फुटी ग्या। म्हारै इस्कूल नो छोरो दरसकं मांय उं आवी ने क्यू, ''आपड़ी इस्कूल पैला लंबर आवेगा। मनखै सब उं वधारै तारीये बेरूपो नै देखीनै वजाड़ी है।''

म्हारै मुंडू नै हाथ धोवा पाणी नी डोल भरी ली अती। पाणी नो कळियो भर्‍यो तईवरै अेकदम काहाबोह थ्यो। वांहे फरीनै जोयु तारै वांदरो बण्यो अतो अैणा छोरा नै पोगं मांय रूई चोटाड़ीली अती अैयं आग लागी गई। छोरो कूदवा लागो। जैम कूदै अैम आग डीले चढती अती। म्हूं डसराईग्यो पण कळिया मांय भरीलु पाणी अैना माथै रैड़ी दीधु। अेटला मांय अेक माडसाबे डोल भरीलु पाणी अैना माथे रैड़ी दीधू। आग ओलवाई गई। छोरो नेंचे आरोटतो थको रोवा लागो। मंच नो परदो हरगतो अतो अैने मनखै आवी ओलवी दीधो।

कैणेक पूछ्यु तो अेक छोरै क्यू, ''वांदरो बण्यो अैनी गलती है। पोगं कनै चिमनी है ई देखतो नतो। पोग चिमनी कनै अतो ते रूई अे आग हाई लीधी।'' तईवरै तरत दवाखानै लई ग्या। च्यारैमेरै हा-हो थई ग्यो। मिनख कैवा लागं कै अैणी इस्कूल ना मास्टर ने छोरं कने रै'वु जुवेतु। ई पाहे ओत तो छोरो न्हें बळतो। काले कैनुये छोरू मरी जाय तो अैनुं हुं जाय? आवं लापरवा मास्टर साथै छोरं न्हें मौकलवं जुवै। हंगर छोरं नै मिनख वखैराई ग्यं। सब उं वांहे अैणा छोरा नो लंबर अतो। मंच वारै क्यू अतु के अंतिम प्रतियोगी है। दांम छोरा पाछा उतारै अतो अैयं आव्या। हंगरी खुसी खोवाई गई।

 ISSN : 2320-0995

रात रा मोड़ा हुता अता ते वेलु न्हें उठणु। माडसाबे उठाड़ी ने क्यू, ''झट त्यार थईनै खेल मैदान मांय पूगो। आपड़ो सामान हमेटी लेजू। इस्कूल थकी आवी नै सीधा घेरै जावा नुं है। माडसाब ग्या पुठै जलधारी बोल्यो, ''रात रा बरी ग्यो ई छोरो बाप नो अेकाअेक बेटो है। असल दवा करावत्रा रातुरात मोटे दवाखानै लई ग्या। अैना माडसाब तो हंताई ग्या।''

खिलाड़ी खेल मैदान मांय पूगी ग्या। टेम परमणै खेल चालु थई ग्यो। रूमाल झपट नो खेल असल खेल्या, पण बे पोइंट थकी हारी ग्या। तोय तो सेकंड तो आव्या। अैयं थकी समापन जळसा मांय आव्या। खो-खो मांय पैलो नै रूमाल झपट मांय बीजा लंबर नुं इनाम मल्यु। पछै रंगारंग मांय भाग लेवा वारं ने इनाम आलवा नुं सरू करयु। म्हारू मन लोवार नी धोकनी वजू धक-धक करवा लागु। छोरा केता अता के तारे वखतै तारीये घणी वाजी अती पण निरणय करवा वारै हुं कर्यु कैनेये खबर न्हें है। म्हूं पांचवी चौपड़ी मांय हूं। म्हारै तो आ पैलु नै आखरी टुरनामेंट है। दांम छोरं नी निगै इनाम लेवा वारं छोरं आड़ै अती ने तारीये वजाड़ता अता। कविता, वार्ता, अेकाभिनय नुं इनाम आलाई ग्यु। म्हैं भाग लीधो अैनु बाकी अतु। घभरमणी वधी गई। तईवरै सांभर्यु के अवे विचित्र वेसभूसा मांय भाग लेवा वारं नुं परिणाम। म्हारू नाम लईनै क्यू, ''आ पैला लम्बर है। आणै संकर नुं रुद्र रूप धारण करीनै दरसकं नुं खुब मनोरंजन करयु है।''

सांभरतं मांय कमलाईलु फूल खिली जाय अैम म्हारू मुंडू पळकी ग्यु। इनाम लेवा ग्यो तो छोरं नै तारीये नो रणको उडी रयो अतो। इनाम आलवा वारै म्हारा मौरा थपोड़्या। म्हूं घणो खुस थई ग्यो। पाछो म्हारी जगां माथै आवी नै बैठो तारै तारीये बंद थई। म्हनै ई खबर न्हें पड़ी के म्हूं बेरूपो थकी संकर हरतै बणी ग्यो। म्हनै भगवान नीं तसवीर, सलेट नै कॉपी इनाम मांय मली।

जारै भी टुरनामेंट नी वात थाय तारै रातर वारो वायको आंखं मौरे भमी जाय।

❖❖

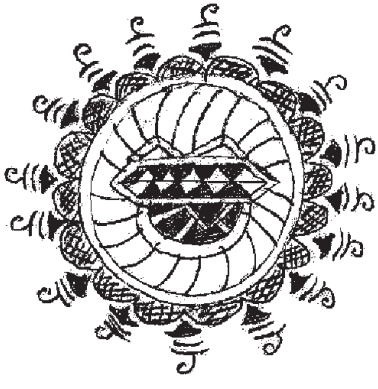

पूनमचन्द गोदारा

स्रिस्टी रो चक्को

चांद मांय बैठी
डैणती
कातै है चरखो

सुळझावै है
उळझी ऊन रा
चूंखा

फेर कातै है
ऊन
ऊन सूं बणावै है
पैराण

जुगां-जुगां सूं
बा बियां ईज कातै
ऊन अर सूत

बीं रै चरखै साथै
भाजतो बगै है
ई स्रिस्टी रो चक्को।

❖❖

प्रीत

थूं
नीं मैसूस सकै
म्हारै
अणहूतै प्रेम नै

जिको लैवे
हिलोरा हिरदै रै
गैरै समंद में

जिको झुरै
छिण-छिण थारी
ओळ्यूं

थूं नीं दीखै तो
फिरूं
बिकनो-बिकनो

प्रेम री
मरीचिका लारै
आकळ-बाकळ मिरग सो।

❖❖

ठिकाणो :
गांव-गुसाईंसर बड़ा
तहसील-श्रीडूंगरगढ़
जिला-बीकानेर (राज.)
मो. 9799305760

ISSN : 2320-0995

घर

म्हैं चिण्यो हो
मैणत'र पसीनै सूं
म्हारो घर

चेप्या काचा पाका
ईंट'र भाटा
अर
करी सिर माथै छियां

अबकाळै
जाणै किणसूं मिली
इंदर री आंख

बो बरस्यो
पूरो नौ घण पाणी

घर फाटग्यो
फिटकड़ी री तरयां
डाळडाळ

जाणै
चालगी तिरेड़ा म्हारी
छाती में

अर आयग्यो
आखै गांव रो पाणी
म्हारी पांती में।

❖❖

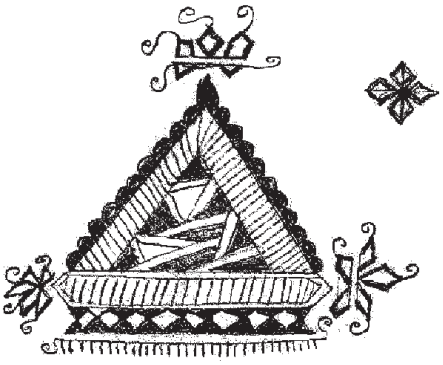

पख

आभै मुळकै हो
पुन्यूं रो चांद
तारा करै हा जगमग
बीं रै साथै
रिगलां मखौलां करता

चांद रै
सिंघासण बैठी चांदणी
निरखै ही
आपरै उजास मांय
धरती रा रंग

बा जाणै है कै
सुख-दुख, ठाठ-बाट
अेक फेर है
च्यानण पछै
आगलौ पख
अंधेर है।

❖❖

गिरणो

मान्यो
थूं गिरयो है ऊंचाई सूं
अर गिरणो
सैंसूं दौरी मांयली पीड़!

पण थूं
उठ सकै है म्हारा बेली
हूंस रो हाथ झाल

पण...
थूं सोच जिका गिरग्या
निजरां सूं

कांई बै
आखी जूण उठ सकसी
बीं गिरणै सूं?

❖❖

डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'

म्हारो इंदरधनख

अबै गा सकूं म्हैं
जीवण रा गीत
सोच सकूं
पुसब, तितली
अर चांद री बात।

म्हारै पगां हेठै है
म्हारी जमीन
म्हारी पूग मांय है
म्हारो आभो
पळपळाट करै है
इंदरधनख
म्हारी हथाळ्यां मांय।

जंग खायोड़ी सांकळां
टूट्योड़ी पड़ी है
पग-पग माथै
धमकावता अंधारा
रैयग्या है
भोत लारै।

❖❖

संकळप

कांई फरक पड़ै
जे है हवा तोफानी
दिवलो छोटो
अर जोत कमजोर

दिवलै रै प्राणां मांय
अंधारै सूं
जंग रो संकळप
राई जित्तो ई
कमजोर नीं है

साखी है आखो जगत
जीवण री जंग
नीं लड़ी जावै
फगत ताकत सूं

संकळप रै
गळै मांय ई
घालती आयी है गळमाळ
जीत री भुवनमोहनी।

❖❖

ठिकाणो :
'श्रीकृष्णम्'
सीताराम द्वार के अंदर
बीकानेर 334001
मो. 9414035688

ISSN : 2320-0995

मुगती

भलांई
खिंडाय दै थूं
सोनलिया सुपना

तोड़ दै
म्हैल-माळिया

डुबोय दै
दुख रा दरियाव मांय
मन नैं

मार दै
तन नैं

पण
नीं मानूं म्हैं हार
नीं गिड़गिड़ावूं
थारै साम्हीं

म्हैं पीड़ सूं आली
आंख्यां सूं भी
देखूं जीवण रा सुपना

रूंध्योड़ै कंठां सूं भी गावूं
प्रीत रा गीत
सुण मौत!
विणास सूं कंपकंपावती
थारी हथाळी पर धर्‌योड़ै
इण काच जैड़ै जगत नैं
बणावण नै सोवणो
म्हैं बार-बार
बावड़सूं
आ ईज होसी
म्हारी मुगती
म्हारी तिरपत
म्हारी जीत।

❖❖

इमरतियो कुंड

ओळमपोळ
अेक इमरतियो कुंड
खावै हिलोरा
म्हारै मांय

सांसां सागै आवती
बीं री खबर
नूंतै म्हनैं

म्हैं भी
जद हुवै मन
होळै-सीक
सरक जावूं ऊंडी
झाल'र सांसां री जेवड़ी

धारूं
प्राणां री हथाळी माथै इमरत
करूं आचमन

सांवट'र आपो-आपनैं
लगावूं डुबकी
हुय जावूं
नूंवी-नकोर
राती-माती
सुरतां मदमाती
औ इमरतियो कुंड
कुंड नीं है फगत
समंदर रो सागी है

इणरी नाळ
मांय री मांय
बंध्योड़ी है
'रसो वै सः' आळै
अथाग समदर सूं।

❖❖

थरथरावै है बिस्वास

हरेक मिनख रै
कंठां माथै है
दूजै मिनख रो हाथ!

हरेक री
सांस-नळी माथै
मंड्योड़ा है
कनलै री
आंगळ्यां रा निसाण!

छीनाझपटी
लूटमपाटी रै बिचाळै
थरथरावै है बिस्वास

आकळ-बाकळ
सांसां लेवै है
मिनखपणो!

❖❖

राजाराम स्वर्णकार

म्हारी कविता

अन्यावां सूं भचभेड़ा कर, आगै आवै
चिन्नी-सीक नहीं घबरावै
भूंडी कुचमादी सतावां रा, विषदंत उखाड़ै
दे धंधूणी पटक पछाड़ै, म्हारी कविता।
म्हारी कविता
सतमारग री इण जुगती में
चावै लोहीझ्याण हुय जावै
मिटणै री नौबत आ जावै
पग पाछा नीं धरै, नीं बा गोडा टेकै
पखपात नीं करै, नीं खुद रा स्वारथ सेकै
बस, कविता रो धरम निभावै, म्हारी कविता।
धरम, जिको निम मिनखाचारै री, सखरी मरजाद बांधै
धरम, जिको नैतिकता री सींवां नैं कदै नीं लांघै
धरम, जिको कविता में घुळ'र, नित सबदां री साख बधावै
धरम, जिको मारग भटक्योड़ा लोगां नैं रस्तै पर लावै
इसै धरम नैं म्हैं कविता रो अंग बणाऊं
खुद ई रचूं अर खुद उणमें रच जाऊं।
रगतबीज बोवण वाळां रो धरम अलग है
जिका भिड़ाऊ भाठा है, वांरो करम अलग है
कविता तो मानव मंगळ रो नेम निभावै
कर आतम-संवाद समै सूं आगै आवै
संकट में चूड़ी, सिंदर री लाज बचावै
जीवण सारू लोगां में विस्वास जगावै
अेक नूंवो संसार रचावै म्हारी कविता
सदा क्रांति रो नाद सुणावै म्हारी कविता।

❖❖

ठिकाणो :
शिव-निवास
बरतन बजार, बीकानेर
मो. 9314754724

ISSN : 2320-0995

अरदास

जे थे म्हारी मदद करो तो इणमें क्यांरो किरियावर
थे माईत जगत रा हो तो म्हे भी तो थांरा टाबर

म्हारै लारै ठाकरसा, आ थांरी ठकराई चालै
सेंत-मेंत में मिल जावै थांनै म्हारै जैड़ा चाकर
जे थे म्हारी मदद करो तो...

साधक बिना सिद्ध नैं भाईजी कुण जाणै कुण पैचाणै
वै ईज तो थरपावै थांनै भाठै नैं मानै भाखर
जे थे म्हारी मदद करो तो...

बिना भगत भगवान अमूझै, बैठा सूनै मिंदर में
भोग ध्यान परसाद टंकोरा, बाजै म्हारै ई बल पर
जे थे म्हारी मदद करो तो...

दोनूं हाथां ताळी बाजै, आ तो थे भी जाणो हो
थे हो तो म्हे हां, म्हे हां तो थे बाजो हो विश्वंभर
जे थे म्हारी मदद करो तो...

वेद पुराण उपनिषद सगळा है मिनखां रै रचियोड़ा
थे तो सिरफ बिराज्या वां में, दुनिया रै हित री खातर
जे थे म्हारी मदद करो तो...

रसलीला या राफड़लीला दोनूं रै मिलियां चालै
म्हासूं मत रूठो थे प्रभुजी, मै'र करो म्हारै ऊपर
जे थे म्हारी मदद करो तो...

खोज खबर लेवो दुनिया री, साख सवाई राखण नै
जै जैकार हुवैला थांरी, आ अरदास करूं प्रभुवर
जे थे म्हारी मदद करो तो...

❖❖

निशा आर्य

मायड़ थारै आंगणियै

आंख्यां खोली नांव धरयो
मायड़ थारै आंगणियै
मार पालथी दूध पीयो
मायड़ थारै आंगणियै

नान्हा नान्हा पगां चालती
भर किलकारयां हेला घालती
भाग-भाग लूड़ियो पकड़ियो
मायड़ थारै आंगणियै

हंस-हंस फूल बिखेरया करती
पकड़ हाथ थारै कांधै चढती
रो-रो घर नैं ऊंधो कर लियो
मायड़ थारै आंगणियै

हाथां सूं थारै चूंट्यो खाती
भर-भर धोबा धूड़ उडाती
पाणी में चांद पकड़ियो
मायड़ थारै आंगणियै

❖❖

ठिकाणो :
देवनारायण कॉलोनी
वार्ड नं. 3, मगरा बास
लाडनूं (नागौर) राज.
मो. 9667369683

ISSN : 2320-0995

मायड़ भासा

चालो नूंवो इतिहास बणावां
मायड़ भासा रो माण बधावां

भाषा बिना ना बात बणैली
दुनियां थांनै कांई कैवैली
लिखणो है मायड़ में पैली
राजस्थान री शान बधावां
चालो नूंवो इतिहास बणावां
मायड़ भासा रो माण बधावां

राणा रो अभिमान इणी सूं
पन्ना रो बलिदान इणी सूं
मीरां रो है मान इणी सूं
इण सूं ई अब कलम सजावां
चालो नूंवो इतिहास बणावां
मायड़ भासा रो माण बधावां

सूरां री वाणी री साणी
नरसी री भी अजब कहाणी
मरवण इणसूं गई पिछाणी
धोरां री धरती महकावां
चालो नूंवो इतिहास बणावां
मायड़ भासा रो माण बधावा

लाळस रो ईं में सबदकोस है
मीसण कह दी सन सत्तावन
आढा रो चूंगटियो चेतावण
क्यूं तपस्या आंरी व्यर्थ गमावां
चालो नूंवो इतिहास बणावां
मायड़ भासा रो माण बधावां

भासा बिना के राजस्थान
लागै बिन देवळ रो थान
परभासा रो कांई गुमान
खोयो माण पाछो ले आवां
चालो नूंवो इतिहास बणावां
मायड़ भासा रो माण बधावां

भासा बिना पिछाण अधूरी
भासा ई बा पैली धूरी
रैगी इण बिन कसर अधूरी
आओ सगळा सूची में ल्यावां
चालो नूंवो इतिहास बणावां
मायड़ भासा रो माण बधावां

कांई मचा राखी रै भेळ
मंत्री जी क्यूं राख्या पेल
इब आं तिलां में कोनी तेल
आर-पार री जुगत लगावां
चालो नूंवो इतिहास बणावां
मायड़ भासा रो माण बधावां

❖❖

पुनीत रंगा

रिस्ता

काल तांई जिको
उफणतो हो
थारै-म्हारै बिचाळै
अेक महासागर
आज
उण माथै जमगी है
बरफ री
अेक मोटी चादर
दूर-दूर तांई
अेक
अणटूटतो सरणाटो
अणभोग्यो सूनोपण
अणसैयो अणजाणपणो

कांई हुवै
जे कदी-कदास
दम तोड़ती कोई माछली
सांस लेवण नै
इण जाडी पड़त नैं तोड़'र
मूंडो बारै काढ लै तो ?
पण दूजै ई पल
बा ई
जानलेवी खामोसी
बा ई
दमघोटू-सूनवाड़
बा ई
मुड़दा चुप्पी
बा ई
जीवत घुटण।

❖❖

खुद रो कुण ?

म्हैं
आपणां रै बीच हूं
औ भरोसो
इंसान नै
जीवत राखै
पण जद बो
औ परखणो चावै कै
आपणां में
कुण है आपणो ?
तद
बो चावै
उणी पल
आत्महत्या करलूं।

❖❖

ठिकाणो :
नत्थूसर दरवाजै रै बारै,
बीकानेर (राजस्थान)
मो. 9829138001

ISSN : 2320-0995

थूं तो नीं है

नितूगै
अेक फूठरी चिड़कली
बैठ जावै आय'र
म्हारै डागळै
भोरा न भोर
घणी चावना सूं
आंगण नै निहारती
म्हनैं देख'र
पांख्यां फड़फड़ावै
दरद भरिया सुरां में
कीं कैवणो चावै
पण कीं नीं कैय पावै

सिंझ्या हुवतां ई
फुर्र उड जावै
नीं जाणै कठै?
कठैई थूं तो नीं है?
❖❖

म्हारो घर

जिणरो आंगण
म्हारो नीं
जिणरी छात
म्हारी नीं
जिणरा आवण-जावण रा
दरूजा म्हारा नीं
हवा-रोसणी देवण वाळी
खिड़कियां म्हारी नीं,
उण घर नै कैवणो पड़ै
म्हनैं म्हारो घर
आपरो घर
इस्यो दुखदाई धोखो
कांई हुय सकै
खुदोखुद नैं देवणो?
❖❖

खोज मिनखपणै री

भाठा री दुनियां रो
अेक भाठो
म्हैं जोवूं हूं
जुगां सूं-
उण छैणी-हथोड़ी नैं
उण हाथां नैं
जिका
तराश'र म्हनैं
अेक मूरत बणा देवै
अेक साचै मिनख री
अैड़ी मूरत बणावण वाळा
कठै गुमग्या बे हाथ?
❖❖

दरद

दरद रै अेक
कंवळै से रिस्तै सूं
जुड़्यो हूं
जगत सूं
इणी दरद री भावना
म्हनैं जोड़ै है-
हर आंख रै आंसू सूं-
हर मनड़ै री आह सूं
पण जिण बगत
दरद सूं म्हारो रिस्तो
नीं रैवैला
स्यात
देह सूं प्राण रो नातो
टूट जावैला
दरद नीं तो
म्हैं नीं।
❖❖

परम्परा

बाळपणै में ही
म्हारै परिवार वाळा
मेळै में
खुदवाय दियो
म्हारै हाथ माथै
म्हारो नांव
अबै म्हैं
बदळणो चावूं
खुद रो नांव
लाख जतन करूं
पण बो
हाथ माथै खुद्यो नांव
म्हारो लारो नीं छोडै
चामड़ी री तरै
चिपक्योड़ो है
बो ईज नांव।
❖❖

विप्लव व्यास

जात्रा

करणी ई पड़ै जूण-जात्रा
आप चावो कै नी चावो
इण रा तरै-तरै रा रंग
देखणा ई पड़ै
रातोड़ी भोर सू लेय'र
आखी रात री चूं-चूं
सुणणी ई पड़ै
इण मांय रैवै राता-माता
होवता वै सैंग
जिकां इणरै साथै-साथै
आपरै होवणै रो अरथ सोधै
सोधै मानखै रो विकास
फकत निचोड़'र फेंकण आळी
अनीत रो बीजो पख
आवै सौरम
अैड़ै ई मिनखां री
जिका करै घर फूंक'र
आपरी जात्रा
मानखै रै नामै
चाल ई रैयी है
कालो-काल सूं
विचारां री जात्रा
साचा वै जात्री अर
साची वांरी जात्रा

❖❖

ठिकाणो :
उस्तां री बारी रै बारै
हरोळाई हनुमान मिंदर रै
कनै, बीकानेर (राज.)
मो. 9571770908

रेत

बाउजी धोरा ज्यूं डीगा
अर मां पसरयोड़ी रेत ज्यूं
हमेस म्हनैं राखता कनै आपरै
रूंख रै बीज ज्यूं।
कदै-कदै होवतो मिलण
धोरा अर रेत रो
जद सासरै सूं आवती बैन
ज्यूं छांटां, आंधी अर
आभै मांय चमकती बीजळी
तद लखावतो रेत सूं बण्या धोरा
अर धोरा मांय रेत अेक ई है
ज्यूं म्हैं हूं अंसी मरुभोम रो
जकी सिखावै चालणो
बोळणो अर लड़णो
इण बळ-बळती भोम मांय
बरफ ज्यूं पिघळ-पिघळ'र जीवणो।
म्हारै अरथां नैं अरथावती
मुगती रो मारग बतावती
आ रेत
इण रो कण-कण बसै है
म्हारै चारूंमेर
म्हारै मांय ऊभा है धोरा
अर पसरयोड़ी है रेत।

❖❖

ISSN : 2320-0995

धोळो पानो

धोळै पानै जियां हूं
म्हारै माथै आखरां ज्यूं
आई छपी थूं
बातां रा रागोलिया घालता हा
कदैई बिछता हा
बाळू माथै चांदणी ज्यूं
पण कांई होयो अैड़ो
कै नीं छपै, नीं बिछै थूं
अर म्हैं ई रैयो कठै
धोळै पानै ज्यूं!

❖❖

जरूरी है कांई

आंगण री लीक
दिखापै री रीत
बातां रा मांडणा
साथै खावणा
टाबरां रै खातर
संबंधां नैं ढोवणा
इण तरै रेवणो
थारो-म्हारो
म्हारो-थारो
जरूरी है कांई?

❖❖

बिरखा

इण तरै आई-छाई
म्हारै माथै थूं
कै हिलोरा लेवै भोम
बायरा लखावै गावता
हरख री हिलोर
कण-कण मांय
बाजतो जावै
थारो ई तुणतुणियो
थारी राग रा रागोलिया।
माडै मांडणा
मानखै रै धीजै
आखिर आई तो है थूं
उडीक री आस
कै होम दिया डांगर
डांगर तो कांई
जयोड़ा खुद रा
छेकड़ जीवण री हूंस
नीं छोडी करमभोम
लाशां माथै सतरंगी
सुपना लेय'र
आखिर आई तो है थूं
बिरखा!

❖❖

देस मांय

अचाणचक फूट्यो हाको
कळजळ मचगी चारूंमेर
पाना रा पाना रंगीजिया
सरदारां री कारसतानी रा।
थूं क्यूं बड़बड़ावै?
पड़ी थारी माळा फेर
कळजुग है कळजुग
जुग रा लेखा
भुगतणा ई पड़ है।
भुगतणा पड़्या हा
भगवान नैं भी
आपां कुण?
बै लड़णै री खिमता तो
राखता हा
आपां कांई राखां?
गळी री टूट्योड़ी नाळी
बंद बत्ती भी
ठीक नीं करा सकां।

मानखै री चाम मांय
लपेटीज्योड़ा गादड़ा हां
जिकां रो काम डरणो
अर डरणो ई है।

आ चालती रैयी है इयां ई
औ ईज तो सीख्यो है
फेरूं क्यूं मचावै हाका!

जे होवै खिमता लड़णै री
राज री आंख मांय
आंख घालणै री
तो करीजै हाका
आईजै सड़कां पर
लगाईजै नारा

नीं तो
बंद कमरै मांय
चार जणां मांय
मत करजै अफसोस
कै कांई होय रैयौ है
देस मांय।

❖❖

मीनाक्षी आहूजा

प्रीत रो अणहद नाद

अेक दिन नदी
उतर म्हारै भीतर
मचा दीन्ही रमझोळ
अर पूछै म्हारी पीड़
रूह देखै धड़कन कानी
अर बिस गयी
सुध-बुध
घर-संसार री
थारी ओळ्यां मांय
बूढै नैणां सूं बैवण लाग्यो
अेक दरिया आंसुवां रो
रीतग्यो प्राण
बेजान अर बंजर
अेक निष्प्राण डील
ना राग, ना रंग, ना नाद
कीं नीं बच्यो
इण काया मांय
पण अजैई ठाह नीं
कीकर सुणीजै
इण सूनी देही मांय
थारी प्रीत रो अणहद नाद।

❖❖

ठिकाणो :
सी-10
मॉडल टाऊन द्वितीय
सरकारी अस्पताळ रै लारै
श्रीगंगानगर 335001
मो. 9413372488

ISSN : 2320-0995

हेत जगावै छोर्‍यां

अेक प्रीत री आस लेय'र जलमै
पण अणजाणी बात
अणजाणी सोच सूं ई
कांप जावै छोर्‍यां
डरै, पण दोहरावै मन मांय
इयां तो डरां कोनी म्हैं
माटी री देह—थारी भी-म्हारी भी
ममता री मुळक लेय'र जामी
लुगाई रुखाळण घर री
कळपती, अणमणी, डर्‍योड़ी
मन री तो समझ्यो कोनी धणी भी
सगळां देखी सूरत सोवणी
अर रैयी सासरै पराई
भांत-भांत री अणूती पीड़
अधलिख्योड़ी कहाणी छोरी।
आंसूड़ा भरीजी आंख्यां
ढूंढती रैवती पड़ूत्तर
सगळै सवालां रा
जणती टाकर, पोखती परिवार
बरस-बरस खिसकती
बंजर होवती छोरी।
पण इसो सौभाग
पत्थराळी धरा मांय भी
फूटती रैवै हेत री कूंपळ
दया अर ममता सूं भर्‍योड़ी
अजै भी जामै छोरी।
च्यारां कानी बंद किंवाड़-खिड़क्यां
पण जोह लेवै चानणै रो कतरो
जींवती रैवै छोर्‍यां
घर बणावै छोर्‍यां
हेत जगावै छोर्‍यां।
❖❖

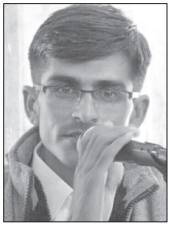

महेन्द्रसिंह सिसोदिया 'छायण'

काळिया रा सोरठा

तोड़ देय ततकाळ, स्वारथ रिस्ता सांवठा।
बणियो वरख विसाळ, कूड़ कपट रो काळिया।।

खरी कमाई खोस, डाकीचाळो कर डसै।
रुळियारां रो रोस, कोजो है रे काळिया।।

गिणै र गरब गुमान, रुपियां आगळ रोळिया।
अपणो साच इमान, काग उडावै काळिया।।

खूट गयी वा खाद, घर जिणसूं गरबीजता।
मिनखां री मरजाद, कींकर रैसी काळिया।।

वधियो व्याभिचार, माया कारण मुलक में
लोक हुया लाचार, कपटी साम्हीं काळिया।।

डाकी डकळीचूक, जैर फैलावै जगत में।
मोती माणस मूक, कीं नीं बोलै काळिया।।

जिणरी नहीं जबान, झट फुर जावै झपटतां
मिनखां हंदो मान, कीकर रैसी काळिया।।

फट कर देवै पाप, डाकी किणसूं नीं डरै।
धाड़ा पाड़ै धाप, कळजुग मांही काळिया।।

बण विषधर बदमास, डाकीचाळो कर डसै।
वांरो की विसवास, कूड़ तणो रे काळिया।।

ठिकाणो :
वाया/पोस्ट-छायण
तहसील-पोकरण
जिला-जैसमलेर (राज.)
पिन-345023
मो. 9587689188

ISSN : 2320-0995

दिनकर जासी डूब, सच वाळो संसार में।
खैर मनासी खूब, कपटी हिळमिळ काळिया।।

मिट जासी जग माण, आंख्यां पाणी आकरो।
पत वाळो परमाण, कींकर देस्यां काळिया।।

लालच सूं ललचाय, काण गमावै कायदो।
लांपो देय लगाय, कूड़ बोलतां काळिया।।

कर कर कोजा कांड, घट घट में विष घोळ दै।
भरमावै नित भांड, काळै मन सूं काळिया।।

चवड़ै धाड़ै चोर, लूट मचावै लोक में।
परभातै री पौर, कोजा बोलै काळिया।।

लकड़ी छाया लूंख, अंग-अंग में ऊपजै।
रूप निखारै रूंख, कचनारी ज्यूं काळिया।।

फबै फूठरा फोग, आंटीला धर आकड़ा।
रती न लागै रोग, कूमटियां रै काळिया।।

गांव-गळी रै ग्वाड़, ओप रही छै ओरणां।
जबरो वरख जुगाड़, कीरत हंदो काळिया।।

छाळ फूलड़ां संग, रूंखड़ला रळियावणा।
आपै अपणा अंग, काळ बगत में काळिया।।

तरुवर तारणहार, माणस हिव महकावणा।
तुरत होयनै त्यार, काटै मत ना काळिया।।

कूमटिया अरु कैर, खींच चग्गा सह खेजड़ा।
बोरड़ियां रा बेर, कलप मरुधर काळिया।।

सौरम नै छिटकाव, मोहै मनड़ो मिनख रो।
सीतळ सीतळ छांव, कलप तणी है काळिया।।

❖❖

शकुंतला अग्रवाल 'शकुन'

नैण बहावै नीर

म्हारै हिवड़ै में बसै, या रूपाळी नार।
मुळकै चमकै बीजळी, मारै नैण कटार।।

कुणसै अब बातां करां, कुणसूं कैवां पीर।
ढोला ग्या परदेस में, नैण बहावै नीर।।

पढी-लिखी अै छोरियां, त्यागी सगळी लाज।
कुण बजावैलो अठै, (इब) मर्यादा रो साज।।

चौखट पे कद सूं खड़ी, माता सुणो पुकार।
थारा पग री धूड़ हूं, नाव लगा द्यो पार।।

कीकर आऊं साजना, मा'सा बैठ्या पोळ।
जाण सको तो जाणलो, मरजादा रो मोल।।

जिण पूतां नैं खून सूं, सींच्या है नौ मास।
परण्यां पूठै दे रैया, मा'सा नैं बनवास।।

प्रीत छिपायां कद छिपै, बांधो कित्ता बंध।
सौरम ई बतळाय दै, ज्यूं किस्तूरी गंध।।

माथै बैठी बीनणी, रोज दिखावै जात।
जीभ कतरणी ज्यूं चलै, दिन देखै ना रात।।

मन री मन में राखज्यो, लंका ढावै भेद।
घर भेदू ही थाळ में, मोटो करदै छेद।।

ठिकाणो :
हनुमंत कृपा, 10 बी 12
आर.सी. व्यास कॉलोनी
केशव हॉस्पीटल रै कनै
भीलवाड़ा 311001
मो. 9462654500

ISSN : 2320-0995

करम करै जो रात-दिन, मन में थावस राख।
सुख पावैला अेक दिन, जी में काजू दाख।।

माथ चढायो पूत नैं, मारण लाग्यो लात।
जीवण बणग्यो नरक अब, दिन भी लागै रात।।

चतराई सूं ढांक लै, आंगण री जो लाज।
जीवण-भर करता वही, सगळा जग पे राज।।

भायेलो मतना बणा, बिना परखियां आज।
पल में काटै बाड़ नै, तोड़ै सुख रा साज।।

ओछा मिनखां सूं सदा, छेटी रैणो मीत।
ओछो पल में घात दै, या दुनिया री रीत।।

मिनखाजूण मिली थनै, करलै पुण्य करम।
ईश कृपा हो जावली, निभ जावैलो धरम।।

अैंठै गीली जेवड़ी, त्यों अैंठै धनवान।
धूड़ चाटता अेक दिन, जीवण मरण समान।।

रोज थपेड़ा मारबा, लागी जद सूं धूप।
कुम्हलाणी है कामणी, फीको पड़ग्यो रूप।।

मा'सा बैठ्या पोळ में, बणकर चौकीदार।
कीकर आऊं चोवटै, बतळाओ भरतार।।

आंख्यां को पाणी मर्‌यो, साथै मरगी लाज।
आंगणियै कस्यां बजै, मरजादा रा साज।।

दाझी धरती जेठ में, सगळा व्हिया अधीर।
पंखेरू रै वास्तै, भरो परींडै नीर।।

महीनै है बैसाख रो, झुळस्या सगळा रूंख।
ताल-तळैया साथ में, गया परींडा सूख।

❖❖

प्रहलाद कुमावत 'चंचल'

ठौर बदळग्या नेतां का

पड़ग्या वोट चुनाव बीतग्या, ठौर बदळग्या नेतां का
सुपनां में भी दौरा होग्या, दरसण अब हकड़ेतां का

दीन धरम ईमान डूबग्या, हाथ न कांपै लेतां का
गळी-गळी अेजेट घूमरया, बाबू अफसर नेतां का

करजो ले'र विदेस भाजग्या, राम निकळग्या देतां का
हाथां रास लुटावण हाळा, हाळी होग्या खेतां का

अलट-पलट सैं री न्यू होग्या, क्रेडिट कार्ड चहेतां का
भोळा तो मय ब्याज चुकाया, होग्या माफ पछेतां का

म्हारै ढूंढा पड़्या उघाड़ा, छप्पर उडग्या बेंतां का
सोना सेती बजरी व्हैगी, भाव चढ्या अब रेतां का

अंगेजी का करै कलेवा, च्याव चुकळग्या चेतां का
आज मदर-फादर डे होग्या, समद रीतग्या हेतां का

'चंचल' जीवण मोल बदळग्या, बदळ्या अर्थ सुकेतां का
भाई बण कोयल का अंडा, काग चुरावै सेत्यां का

❖❖

ठिकाणो :
जाहोता 303701
जयपुर (राजस्थान)

ISSN : 2320-0995

कम रैग्या

आपसरी में हेत हेत रा, मौ'रा जाळा कम रैग्या
भटकंतां नैं बांध राखलै, अैड़ा ताळा कम रैग्या

बै अरथां रा गाणा गावै, गळो फाड़ अरड़ाय रैया
मीठै सुर में राग रागणी, गावण हाळा कम रैग्या

मनां चौपड़ी बात बणावै, पाछो फिरतां दे गाळी
आमै-सामै साची-साची, कैवण आळा कम रैग्या

खेती रहगी राम भरोसै, बाड़ खेत नैं खाय रही
टीबा डूंगर रूंख रूंखड़ा, नंदी-नाळा कम रैग्या

परदेस्यां री देखा-देखी, नुंवा-नुंवा डे रोज मनै
तीज तिंवारै रामा-स्यामा, चंचल चाळा कम रैग्या

❖❖

तम्बाकू नैं छोड बावळा

तंबाकू नैं छोड बावळा, बेगो मूंडो मोड़ बावळा

जरदो गुटखो सुरती फांकै, क्यांनै होडा-होड बावळा
चिलमां अर बीड़ी सिगरेटां, तनड़ो लियो निचोड़ बावळा

आंख्यां तो खाडां में बड़गी, दूखण लाग्या जोड़ बावळा
काळा-पीळा दांत हो रया, बिगड़ी जावै खोड़ बावळा

बेमारयां की भैण तमाकू, ईं सूं क्यांको कोड बावळा
खांसी-टीबी, दमा-कैंसर, रोगां को गठजोड़ बावळा

कर्क रोग को तोड़ नहीं छै, खरच्यां रुप्या करोड़ बावळा
गाडी-घोड़ा, खेत-गवाड़ी, बिकै रजाई सोड़ बावळा

जे सुख चावै काया-माया, हेत राम सूं जोड़ बावळा
बाण खोडळी तज दे 'चंचल', समझावूं कर जोड़ बावळा

❖❖

प्रीतिमा 'पुलक'

बेटी री अरज

बेटी अरज करै छे, कर जोड़'र माई री
म्हूं भी जाऊं सीमा पर, दौड़'र माई री

चूड़्यां, मैंद्यां को माई री, मनै घणो चाव छै
बंदूकां उठावा का पण, म्हारा मन में भाव छै
म्हारी पाजेबां मचा रही शोर माई री
खोल'र यांनै लगाऊं लंबी दौड़ माई री
म्हूं भी जाऊं....

बैर्यां की बंदूकां म्हांका, भाई वीरां पे तणरी छै
घणी जोर सूं तोपां गाजै, आग ई आग उगळ री छै
कोई कह दे न म्हांनै रणछोड माई री
दे आसीस दिखाद्यां पूरो जोर माई री
म्हूं भी जाऊं....

दुनिया में घमसाण मच्यो, भारत की रुखाळी करणी छै
मिल'र अेक साथ म्हांनै, लाज दूध की रखणी छै
बेट्यां नैं मत आंको कमजोर माई री
दू बैर्यां नैं म्हूं झकझोर माई री
म्हूं भी जाऊं....

❖❖

ठिकाणो :
अध्यात्म, सी-म
कपिलवस्तु कॉलोनी
झालावाड़ (राजस्थान)
मो. 9928216828

ISSN : 2320-0995

मोबाईल

अंगळ्या-संगळ्यां मिल करता था, चौपालां पे बातां रे
मोबाईल में धंसगी अब तो, सगळी सगळी रातां रे

गुणीजन तो करै तरक्की, इण सूं ग्यान बधावै रे
निपट बावळा अग्यानी तो फोगट में समय गमावै रे
कोड को ताळो लगा'र फरै छै छपाता रे...

संदेसां में ग्यान बघारै, बण रिया छै ग्यानी रे
ठोकर खायां सूं ई सुळझै, जीवण राम कहाणी रे
बरसां सूं ग्यानी-ध्यानी, या ही बात बताता रे...

ढोलक अर मंजीरा भूल्या, इयर फोन लगाया रे
मोबाईल की प्रीत डूब्या, देखो मन इतराया रे
रामजी बिसार के, जै फोर-जी की गाता रे...

❖❖

नारी अर जंजीर

नख सूं सर तांई रही बांधै, थईं सदा जंजीर
मन के भीतर झांक न समझ्यो, कोई थारी पीर

बदळ्यो समय बदळ न पाया, पण थारा हालात
हर युग में थारा आपणा नै, दे दी थईं मात
थारै लेखै होती आई, बस सदा तकरीर...

घर सूं बाहर आर भी, बोल थनैं कांई पायो
दोहरी पड़गी मार काम की, खूब गयो छकायो
लायक तो तूं घणी होगी, पण नैणां भर्‌यो नीर...

ये बातां अर वै घातां, हिला थईं न पावै
अब नारी नैं नारी समझै, आगै बधती जावै
संवारणी छै मिल-जुलकर, खुद अपणी तकदीर...

❖❖

सुनीता बिश्नोलिया

डूंगर

ओ! रस्ता पे जाणिया, कर म्हासूं थोड़ी बात
बैठ अठै बिसराम कर, म्हारै साथ बितालै रात
सुण डूंगर की बात हंस्यो, मनमौजी मेहमान
कह्यो बावळा डूंगर कर तूं, खुद अपणी पिछाण
मैं हरया-भरया बागां में रैणियो, तूं बाठां रो ढेर
जाण भी दै आगै म्हनैं, होवण लागी देर
डूंगर बोल्यो सुण ओ बटोही! म्हारा रूंखां री तूं पुकार
चौमासा में हरया-भरया ही, थारो करैला अै सत्कार
ओ डूंगर! चुपचाप खड़्यो रे, सूखा-रूखां साथ
मत म्हांनै तूं रोक, म्हासूं मत कर झूठी बात
जा रे जा-जा दूर बटोही, पण तूं पाछो आवैलो
मेरा हिया रा रूंखां रै, बैठ तळै सुस्तावैलो
थोड़ा दिनां रै बाद बटोही, फेर उठीनै आयो
गळो सूखग्यो बिन पाणी, मरतो मरै तिसायो
तड़पण लाग्यो तिस को मारयो, रुकग्यो डूंगर देख
पाणी री धार दिखी जद, डूंगर बहती अेक
पी पाणी पिछाणग्यो, डूंगर री आवाज
समझ्यो बटोही—
आज नहीं तो काल पड़ैलो, अेक-दूजां सूं काज

❖❖

ठिकाणो :
ई-5/54
राधिका अपार्टमेंट
चित्रकूट रोड, जयपुर
मो. 9352834589

ISSN : 2320-0995

चिड़कली

अेक नान्ही-सी चिड़कली नैं देख हियो म्हारो हुळस्यो
देख के बीं रा करतब म्हारै नैणां सूं जळ बरस्यो
चुग्गै ही बा अेकली, छाजा पै बैठी दाणा
जाणै कठ्यां सूं आया कागला, ऊंपै झपट्या बै मरजाणा
देख अेकली चिड़कली नैं, वांरी भूख दूसरी जागी
जाण के वांरै मन की चिड़कली, मूं फेर उडबा लागी
उण दुष्टां रै बीच में वा, फंसी चिड़कली अेक
मैं लियो कांकरो हाथ में, अस्यी अनीति देख
ऊं सैं पैल्यां चिड़कली, वांरी उड-उड फोड़ी आंख
कागलिया घायल हुया, टूट गया वांरा पांख
देख चिड़कली री हुंसियारी, हिवड़ै नैं मिल्यो सिंवात
म्हारै साथै मैं म्हारी चिड़कली, मैं भरली ऊंनै बाथ
फुर-फुर, फुर-फुर उडी चिड़कली, नाप लियो आकास
मैं बोली मत डरजै चिड़कली, तूं कर खुद पै बिस्वास

जोऊं थांरी बाट

ढोला जी म्हां पर के बीती, म्हारी खबर पिया जी पाओ
म्हारी बांचो पाति प्रेम सूं अर तार समझ घर आओ
म्हारै जी में बाकी बीज नेह रो, क्यूं जाण बस्या परदेस
दरद-समंदर छोड़ कै, म्हारै जी में भरग्या कळेस
आस में थांरै आवण की, मैं ऊभी बारै गवाड़ी
ना सभळै म्हासूं पीळा-पोमचा, सिर सूं सरकी साड़ी
मोती-सा ढळकै आंसूड़ा, या सनसन चालै पुरवाई
जिया रा बैरी ढोला जी, म्हारी सुध-बुध क्यूं बिसराई
म्हारी कंचन-काया झुळस रैयी, पत्ता-सी खड़-खड़ कांपै
हिवड़ा में उपजै प्रेम-पीड़, थांनै बिन देख्यां ना मानै
म्हारो नाजुक जी घबरावै बलम, मैं कामण करणो भूली
कुण देखै म्हारी रखड़ी बता, सोळा सिणगार मैं भूली
आंख्यां की पुतळी थमी बलम, चंचळता गमगी सारी
बस सांस बची है 'औ' बैरी, जिकी जोवै बाट है थांरी।

❖❖

डॉ. पूजा विकास राजपुरोहित

मोत्यां सूं मूंघा म्हारा मांडणा

राजस्थान में मैंदी अर मांडणा सबद अमूमन सागै-सागै ई बोलीजै। कीं बरस पैलां तांई किणी भी तरै री लिखावट सारू 'मांडणा' क्रिया रो प्रयोग करीजतो हो—चिट्ठी मांडी जावती ही, चितेरा चित्राम मांडता हा, मतलब किणी ई तरै रै लेखन अर चित्रण सारू मांडणा सबद ई बरतीजतो हो। घरां में लीपाई-पुताई रै पछै मांगळिक चिह्न बणाईजता हा, बै ई चिह्न अर चित्राम राजस्थानी उच्चारण में मांडणा कैयीजण लाग्या।

मांडणा

मांडणा मांडण री प्रथा जूनै जमानै सूं चाली आय रैयी है। कैवां तो आदिकाल सूं, क्यूंकै आदिमानव नैं ई आपरो सूनो आवास आछो नीं लागतो हो। जद वो गुफावां अर कंदरावां में रैवतो हो, तद भी बठै री सूनी भींतां नैं सजावतो हो। वनां में विचरण करता पसु-पंखेरू, भोजन सारू करीजण वाळा सिकार रा दरसाव अर विसराम रै खिणां मांय मनोरंजन सारू करीजण वाळा निरत आं मांडणा रा विसय हा। अैड़ा जूना चित्राम आखै जगत मांय देखण नै मिलै। आपणै देस में उतराधै भारत मांय जथा मध्यप्रदेस, उत्तरप्रदेस रै विंध्य खेत्र,राजस्थान रा अरावली अर हाड़ौती खेत्रां में आंरी भरमार है।

कालिदास री 'रघुवंश' मांय पूजा-स्थल माथै बण्योड़ा मांडणा रो उल्लेख मिलै। ब्यांव रै टाणै बणाईजण वाळा मांडणां रो रूपाळो वरणन बाणभट्ट रै हर्षचरित मांय मिलै। हर्ष री बैन रो ब्यांव थानेश्वर रा राजकंवर प्रभाकरवर्द्धन रै सागै हुवै हो। ब्यांव री त्यारियां में लाग्योड़ा सुथार, कारीगर, शिल्पियां री खामचाई अर व्यस्तता रो वरणाव तो कवि करै ई है, सागै ई वांरै कानी सूं चित्रित मांगळिक अलंकरणा रै विसय में ई वै लिख्यो है। आपरी दूजी रचना 'कादम्बरी' में टाबर रै जलम रै

ठिकाणो :
जे-144
पार्श्वनाथ सिटी
जोधपुर (राज.)
मो. 9602531906

 ISSN : 2320-0995

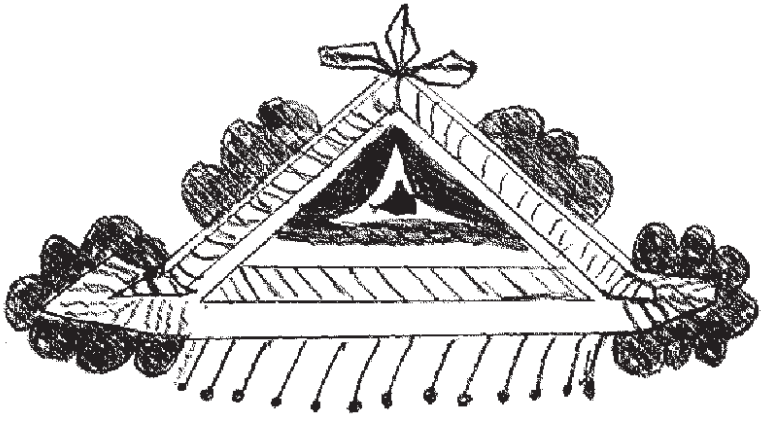

टाणै उकेरीजण वाळा मांगळिक अभिप्रायां रो विवरण ई देवै। प्रसूतिगृह रै प्रवेसद्वार माथै अर ब्यांव रै टाणै लुगायां रै हाथां सूं चित्राम उकेरीजता हा। अमूमन गोबर सूं साखियो मांड'र उणनैं हळदी, मैंदी अर चावळ रा चूरण सूं सजावता हा। शूद्रक आपरी रचना 'मृच्छकटिकम' में वसन्तसेना रै प्रवेसद्वार माथै बण्योड़ा अलंकरणा रो वरणाव करयो है। आज ई लुगायां अैड़ा अलंकरण बणावै। इणी सारू तो कैयीज्यो है :

मरवण मांडै मांडणा, निरखै चतुर सुजान

जैन मुनि सुव्रतकाव्य श्री जिनेन्द्र (18वीं सदी रो मध्य) रै जलम समारोह रै टाणै घरां रै आंगणां में बणण वाळै बहुरंगी रंगालय री चरचा करै। पद्मचरित्र, राम रै रामगिरी आगमन माथै बणाईजण वाळी पांचरंग में बण्योड़ी 'रंगावली' रै विसय में बतावै। 'रंगावली' नैं समाज रा विभिन्न वरगां मांय आपरी देवकथावां, रीति-रिवाजां अर देसकाळ रै मुजब अपणाईजी।

फूलां अर अन्न रै दाणां सूं बण्योड़ी रंगावली अस्थाई ही। जैन समाज इणनैं थिरता प्रदान करी। पुरातत्त्वविदां नैं मथुरा रै कंकाळी टीलै री खुदाई में जको जैन-स्तूप मिल्यो हो, बठै सूं मोकळा 'आयागपट्ट' मिल्या। मान्यो जावै कै अै जिन पूजा सारू बण्योड़ा हा, आं माथै बण्योड़ा मांगळिक, पदचिह्न अर साखिया ई औ ईज संदेस देवै। आं वैदिक चिह्नां री उपस्थिति रै विसय में कैयो जावै कै अै पीढियां सूं चालता आया हा अर जद स्तूप बण्यो अर जिनपूजा सारू आयागपट्ट बण्या तो आं ईज चिह्नां नैं बरतीज्या। इण सूं अंदाजो लगायो जा सकै कै तत्कालीन समाज में अै मांगळिक चिह्न मान्या जावता होसी अर जद कारीगरां नैं भाटां माथै आयागपट्ट बणावण रो कैयीज्यो तो उणां आं ईज प्रचलित चिह्ना नैं उकेरया। आं मांय कोई धारमिक बंधण नीं हो। अै कला जगत अर सामाजिक जीवण सूं जुड़्योड़ा अलंकरण हा।

आज मनाईजण वाळा तिंवारां अर बीजा मांगळिक अवसरां माथै जका मांडणा मांडीजै, बांनै जे अेकठा करया जावै तो पूरो कलाकोस ई त्यार व्है जावै।

मांडणा रो आपरो अेक शास्त्र है। अवसर अर स्थान रै मुजब अलंकरण अर आंरी छोटी-छोटी आकृतियां हुवै, जिकां रा आकार स्थान मुजब बधापो करता जावै। जियां छोटा फूलां री बेल री फुलड़्यां नैं बेल कैवै। साखियै कै स्वास्तिक नैं अेक-दूजै सूं जोड़नै स्थान मुजब बडो संयोजन बणाय लेवै अर वांरै बिचाळै खाली जग्यां नैं चीरण कै छोटी इकाइयां सूं भर लियो जावै। आं अलंकरणां नैं बणावण सारू किणी खास त्यारी री जरूरत नीं पड़ै। गोबर अर माटी सूं लीप्योड़ा आंगणा अर भींतां माथै धोळै चूनै सूं रेखावां बणाय दी जावै। सजावण सारू गेरू अर रामरज रो उपयोग करीजै। ब्रश रै कपड़ो लपेट'र लकड़ी रै लंबो टुकड़ो लिरीजै। केई लुगायां तो इत्ती खामची हुवै कै बडै सूं बडै आकार रो अलंकरण अेक ई बैठक में पूरो कर देवै। औ ई कोई जरूरी कोनी कै पारंपरिक अलंकरणां रो ईज उपयोग करीजै। अवसर रै मुजब आं मांय हेर-फेर करण री ई वांनै छूट है। दाखलै सरूप वट-सावित्री रै वरत माथै रूंख बणाईजै है तो वो तो बणैला ई, पण उणरी आकृति अर भरत आद में स्वतंत्रता हुवै। लुगायां री कल्पना री अभिव्यक्ति रो औ नायाब दाखलो है।

मांडणा अर अलंकर

गांवठी लुगायां आपरै कनै जको वातावरण, पसु-पंखेरू अर फळ-फूल आद देखै वांनै ईज आपरै मांडणा रो आधार बणावै। अर वां माथै ई वांरा नांव थरपीज्या है। दाखलै सारू चौक, अबै चौक में सिंघाड़ै रो चौक, छफूलो चौक, सातदीवां रो चौक आद। मांडणा रा चित्राम कै अलंकरणां मांय कीं खेत्रीय भिन्नतावां दीसै। केई बार विसय अर अवसर अेक ई हुयां रेखावां री गति अर संयोजन मांय फरक साम्हीं दीखै, जिणरो अेक कारण बणावण वाळै रा हाथ अर परिवेस ई हुवै। दीवाळी रै टाणै लिछमी जी रा पगल्या मांडीजै, जका लिछमी अर काळी रै

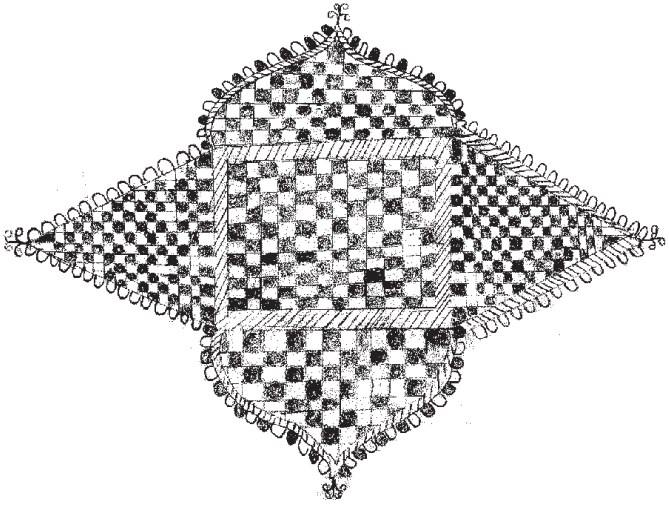

पदचिह्नां रा प्रतीक है। मैमानां अर बहू-बेटियां रै आगमन माथै ई पगल्या मांडीजै। केई बार दूजा प्रतीकां रै सागै ई आंनै जोड़'र बडै संयोजन रो रूप दिरीजै। जियां बींजणी रा पगल्या, सांकळ रा पगल्या आद। स्वस्तिक कै साखियो अैड़ो मांगळिक अलंकरण है जिणरो बरतारो भारत रा लगैटगै सगळां धरमां में करीजै। ऊपर जैन आयागपट्ट माथै बण्योड़ा साखिया, मीन युगल अर पगल्यां री चरचा करी जाय चुकी है। सगळा मांगळिक टाणां माथै राजस्थान में साखिया बणाईजै। जद कदैई घर मांय कोई नूंवी चीज खरीदीजै तो उण बगत रोळी सूं साखियो बणाईजै। चायै वो छोटो-सो बरतन हुवो कै गाडी कै पछै ट्रैक्टर। खेत्रीय आधार माथै देखां तो हाड़ौती में मोर कदैई, तो कदैई जोड़ी में शेर अर मिनक्यां मांडीजै। धान कूटती लुगायां अर फळ तोड़ता आदम्यां रा चित्राम ई उकेरीजै।

अठै अेक बात और देखण में आयी है कै सवाई माधोपुर में बणण वाळी काळी माटी रा रमतियां री आकृतियां सूं आंरी घणी समानता है। दिखणादै राजस्थान रा भील आपरै मांडणां मांय निरत करता स्त्री-पुरुष, लकड़्यां रो भारो ले जावता अर सहद भेळा करता मिनखां रा झुंड आद बणावै। आथूणै राजस्थान में लिछमी जी रा पगल्या अर साखियै रै टाळ कीं खास तरै रा मांडणा मांडीजै, जिण मांय सूं कीं महताऊ विवरण इण भांत है।

महिड़ो

पाणी रा घड़ा राखण री ठौड़ नैं राजस्थान में पळींडो कैयीजै। उण माथै अेक मांडणो बणाईजै, जिण मांय दो लुगायां बिलोवणो करती दरसाईजै। इणनैं 'महीड़ा' या 'महिड़ो' कैयीजै।

मरुधरा मांय रूंखां अर फूल-पत्त्यां रो खास महत्त्व है। पीपळ पवीत बिरछ मानीजै, उण मांय कृष्ण जी रो वास है, खुद श्रीकृष्ण गीता में कैयो है कै रूंखां मांय म्हैं अश्वत्थ हूं, तो मारवाड़ री लुगायां इणरी पूजा अर इणरो चित्र उकेरण में कियां लारै रैवती ? वैसाख महीनै मांय वै पीपळ नैं सींचै अर मांडणा रै लेखै इणनैं मांडै। फूलां मांय कंवळ अर केवड़ै रै फूलां रा मांडणा मांडीजै। दरवाजां अर वांरी साखावां माथै बेल (दरड़ी) बणै अर दरवाजै रै माथै बिरखा री सूचना देवण वाळै इंदर रा दूत 'मोर' रो जोड़ो आम्हीं-साम्हीं मांडीजै।

राजस्थान में ब्यांव रो प्रस्ताव नारेळ रै नेग रै रूप में भेजीजै, तो नारेळ नैं मांडणै मांय ठौड़ नीं मिलै, औ तो होय ई नीं सकै अर मोर रै बिना तो ब्यांव होय ई नीं सकै। अैड़ै मांय मोर अर नारेळ रो अंकन ई हुवै है। अबै अलंकरणां मांय कांगसी, पंखी, बळदागाडी, चौपड़, उल्टी-सुल्टी पगबावड़ी अर तोरण आद खास है।

मांडणा पूरी तरै सूं लुगायां री सिरजण-कला है, जियां दीवाळी माथै लिछमी जी रो पानो मांड्यो कै लिख्यो जावै, पण अेक बार रो लिख्योड़ो हरेक बरस नीं पूजीजै, इण वास्तै हर बरस नूंवो बणै अर हरेक बार सिरजण रै सागै उण मांय प्राण-प्रतिष्ठा हुवै अर तद ई हुवै पूजन। इण सारू किणी पंडित नैं तेड़ण री जरूरत कोनी। लुगायां खुद भींत माथै लिछमी जी अर वांरा पगल्या मांड लेवै। वट सावित्री वरत माथै बड़लै रो घेर-घुमेर रूंख, दसरावै माथै नौ देवी रो चौक, टाबर रै जलम माथै साखियो अर ब्यांव रै टाणै चौपड़, धेवर, चौकड़ी रो जोड़, चटाई रो जोड़, कंवळफूल, फुलड़ां रो चौक बणाईजै।

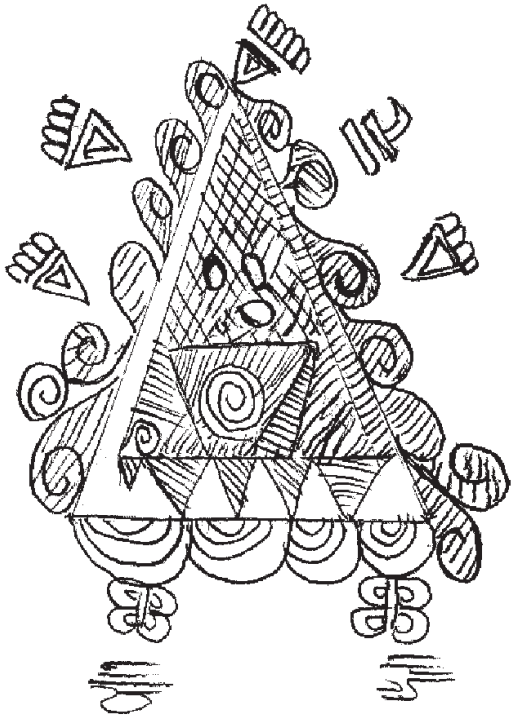

आ कला समाजू अर सिरोळी हुवै, जकी परिवार री बूढी-बडेरी लुगायां रै निरदेसन मांय पूरी हुवै। आ लोककला पूरी तरै सूं समाजू है। कठै कांई बणैला, कद बणैला, कियां बणैला, सगळो कीं पैलां सूं तै हुवै। आ प्रतीक शास्त्र माथै आधारित कला है। कला रो रूप निश्चित हुवतां थकां ई जद लुगायां मांडणा मांडण नै बैठै तो हरेक समूह मांय अलग-अलग ढंग रा वटवृक्ष बणै। रूंख री साखावां रै संयोजन मांय भिन्नता हुवै, भरण सारू अलग-अलग ढंग रो भरत कै चीरण काम में लिरीजै। तिंवार माथै मिठायां बणै तो पछै वांरो अंकन ई क्यूं नीं हुवै—लाडू अर सक्करपारा रा केई चित्राम मांडीजै।

आज री बदळती जीवण-सैली अर लुगायां री व्यस्तता सूं नगरां मांय मांडणां रो पारंपरिक स्वरूप बदळ रैयो है, पण लोकप्रियता में कमी नीं आयी है। बडा होटलां अर रिसोर्ट मांय ग्रामीण परिवेस बणावण सारू आं री मांग बध रैयी है तो क्राफ्ट डिजाइनिंग मांय ई लोग इणरै अलंकरणां रो उपयोग कर रैया है। नूंवी तकनीक आवण सूं लिछमी जी रा छप्योड़ा पगल्या बजार में बण्या-बणाया मिल रैया है। लोग वांनै ईज घर रै दरवाजां माथै चेप लेवै। पण औ मांडणा री लोकप्रियता रो ई परिचायक है।

❖❖

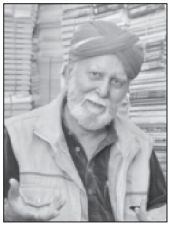

डॉ. आईदानसिंह भाटी

आंचळिकता री आत्मीय डायरी—‘हाट’

म्हारी जाण में राजस्थानी में डायरी विधा री पैली पोथी है—‘हाट’, पण लागै कोनी कै डायरी पढां। हाड़ौती अंचळ रै गांवां-गरियाळां सूं लेय’र ‘छंग्या रूंखड़ां कै गेलै’ मारवाड़ तक री जात्रा कराती आ पोथी ओम नागर री सिरजण-दीठ री बानगी तो है ईज, जगती री चालां रा पळका ई इणमें पड़ै। आज री जीयाजूण माथै इण डायरी में टीप है—“काम कोड्यां का कोई न्हं, अर फुरसत मिनटां की कोई न्हं। ऊंनै जांणै कतनी उतावळ कर धन भेळो कर्‌यो। जगती सूं चल्या जायां पछैड़ी जे बच्या रहैगा, वै छै सबद। सोना-चांदी को धन को सबद कै आगै कांई मोल, कथीर। अर सबद तो ब्रह्म छै।”

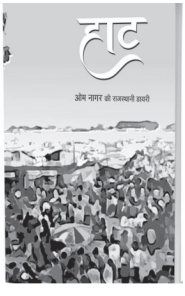

इण गत लेखक आं सबदां री हाट बिचाळै ऊभो होय’र कबीर री गत बाजारवाद नैं पाठक री आंख्यां में उतार देवै। बालपणै सूं लेय’र आज तांई री जूण रा बिंब ‘अेक जनवरी, 2016 सूं 31 दिसंबर’ री इण डायरी में सीधा तो नीं, पण जाण-अणजाण में आ ईज जावै। ओक नागर री कविता री संवेदना इण डायरी में भरी पड़ी है। राजस्थानी रै कवियां सूं लेय’र हिंदी कवियां, साहित्यकारां तक री विचारणा सं आ ‘हाट’ भर्‌योड़ी है। ‘नद्‌दी सूं बातां’ करती आ डायरी ‘हटवाड़ो बाजार बणग्यो’ तक पूगै, अर पाठक रै लोक-मन नैं टंटोळै कै आज जिको विकास व्है है, औ कित्तोक सारथक है। फसलां, पाणी, रसायन अर लालटेन-चिमन्या री जगां पळकती लाइटां कांई उजास है? लेखक रै सबदां में, “आज तो करसाण की आंख्यां कै अगेड़ी छै तो अंधेरो ई अंधेरो छै। उजास का तो आसार दीखता-दीखता ई आळमाळ हो जावै छै।”

ठिकाणो :
8-बी / तिरुपति नगर
नांदड़ी, जोधपुर 342015
मो. 9414325867

लेखक री भासा अर सिल्प-कथ्य नैं साहित्य री घणी विधावां सूं भेटो करावै। कवितावां तो है ईज, जात्रा-वृत्तांत, संस्मरण, कहाणियां, लोकाख्यान, हास्य-व्यंग्य, ललित निबंधां सूं टकरावती आ डायरी हाट राजस्थानी री कहावतां-मुहावरां सूं पाठक रै मन नैं आत्मीय अर अपणास सूं भर देवै। लोक जीयाजूण री संस्कृति अर गीत-कथावां री मिठास रो तो कैवणो ईज कांई !

राजस्थानी रा कवियां री कवितावां इण पळकां में रस अर विचार भरै। राजस्थानी रै कवियां में लेखक भैरवलाल काळा बादळ, रघुराज सिंह हाड़ा, चन्द्रसिंह बिरकाळी, प्रेमजी प्रेम, सूर्यमल्ल मीसण, बांकीदास जैड़े कवियां सूं लेय'र आईदानसिंह भाटी, अर्जुनदेव चारण, राजेश कुमार व्यास, मदन गोपाल लढ़ा अर विनोद स्वामी इत्याद कवियां री रचनावां आपरी डायरी 'हाट' में मांडै। हिंदी, पंजाबी, डोगरी रै कवियां साथै लेखक 'हाट' में वांनै आदर अर हेत सागै याद करै। हिंदी कवि कुंवरनारायण, पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र, कहाणीकार नासिरा शर्मा रै सागै ई लेखक धूमिल, राघवेन्द्र मधु, रवि बाबू भट्टी, गुरप्रीत बोड़वा रै सागै हाड़ौती रा मानीता कवियां-साहित्यकारां नैं जगां-जगां याद करै। आपरी जोड़ी रा अर वरिष्ठ कवियां नै वै संस्मरणां में याद करै। अम्बिकादत्त, अतुल कनक, कमलकिशोर पीपलवा इणमें खास है।

'हाट' में 'जीवन की पीड़' में चावा कथाकार डॉ. सत्यनारायण लिखै, ''ओम नागर की यह डायरी एक तरह से जीवन का हटवाड़ा ही है। जहाँ भांत-भांत के जीवन के रंग मिलते हैं।'' साची बात तो आ है कै कवि ओम नागर जीयजूण री छीजत नैं विचार अर दीठ देवै है, जिकी चीजां लारै रैयगी कै छूटगी है, जिकी समाज री सबळतावां ई, वांनै रोपण री कोसिस है—'हाट'। कथ्य री जीवंतता अर रूप-शिल्प, भासा री ताजगी अर मठोठ इण डायरी नैं संप्रेषणीय अर आधुनिक बणावै। परिवर्तन अर विकासवाद, बाजारवाद रै दौर में 'हाट' री आत्मीय चिणखां मानखै सारू 'चेतावणी रा चूंगट्या' है। अै चिणखां पाठक रै मन में 'अगन जोत' बणैला, म्हनैं पूरो विस्वास है। बधाई।

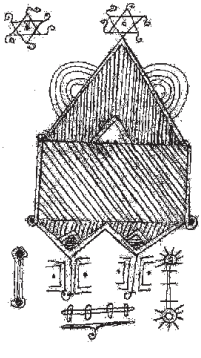

❖❖

पोथी	:	हाट
विधा	:	डायरी
लेखक	:	ओम नागर
प्रकाशक	:	बोधि प्रकाशन, जयपुर
संस्करण	:	2018
पाना	:	184
मूल्य	:	250 रुपिया